ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 20

वर्ष : 30 भाद्रपद-आश्विन वि0स0 2075 सितम्बर 2018 अंक : 9

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

महर्षि दयानन्द के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के अनुसार –

श्रीकृष्ण जी के गुण कर्म–स्वभाव और चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश हैं। महाभारत में श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण–पर्यन्त अधर्म का कोई बुरा कुछ भी आचरण नहीं किया।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून–248008

सामवेद अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

With Best
Compliments From

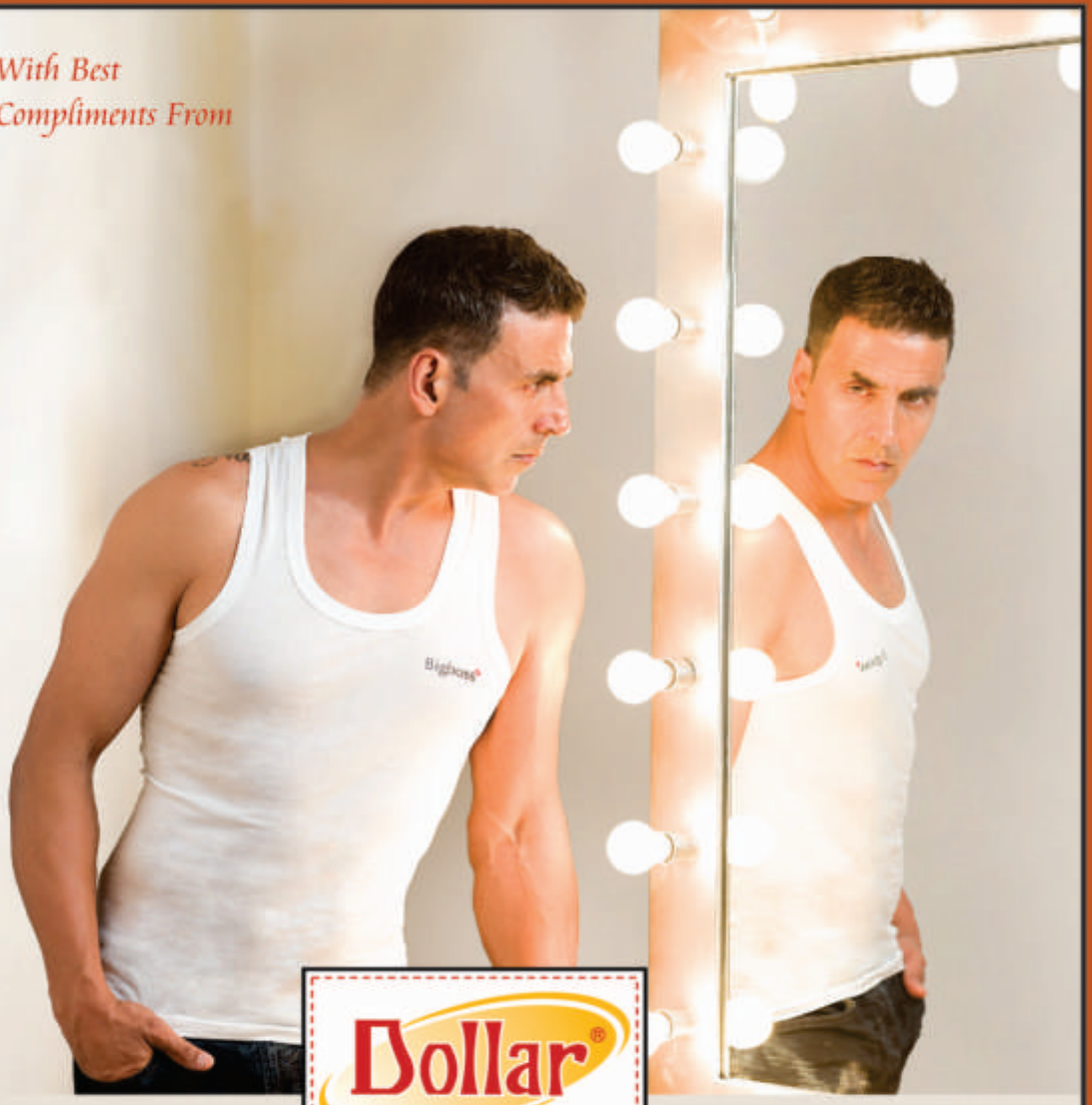

Dollar®

Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

Fit Hai Boss

www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

ओ३म्
पवमान

वर्ष–30 अंक–9

भाद्रपद–आश्विन 2075 विक्रमी सितम्बर 2018
सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119 दयानन्दाब्द : 194

★
–: संरक्षक :–
स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती
★
–: अध्यक्ष :–
श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री
मो. : 09810033799
★
–: सचिव :–
प्रेम प्रकाश शर्मा
मो. : 9412051586
★
–: आद्य सम्पादक :–
स्व0 श्री देवदत्त बाली
★
–: मुख्य सम्पादक :–
कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री
अवैतनिक
मो. : 9336225967
★
–: सम्पादक मण्डल :–
अवैतनिक
आचार्य आशीष दर्शनाचार्य
मनमोहन कुमार आर्य
★
–: कार्यालय :–
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,
तपोवन मार्ग, देहरादून–248008
दूरभाष : 0135–2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com
Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	3
अवतारवाद और मूर्तिपूजा	डा० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
अंधविश्वास व पाखण्डों का कारण अविद्या है	मनमोहन कुमार आर्य	7
मूर्तिपूजा से देश का अधःपतन	आचार्य सूरत राम शर्मा	11
श्रावणी पर्व एवं कृष्ण जन्माष्टमी	मनमोहन कुमार आर्य	12
शिक्षा का केन्द्र तपोवन विद्या निकेतन	मनमोहन कुमार आर्य	15
लक्ष्मी की खोज में	महात्मा प्रभुआश्रित जी महाराज	18
विनायक दामोदर 'वीर' सावरकर	स्वामी यतीश्वरानन्द जी	20
गुरु चरणों में : श्री राम से प्रथम भेंट	ईश्वरी प्रसाद प्रेम	24
मस्तिष्क का पागलपन	महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती	26
रेलवे स्टेशन की खाली और भरी गाड़ियाँ	महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती	27
प्रार्थना	वेदरत्न प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार	28
वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर		29
शरदुत्सव (3 अक्टूबर से 7 अक्टूबर 2018)		30
पेट की गैस का प्राकृतिक समाधान	डॉ० विनोद कुमार शर्मा	31

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1.	कलर्ड फुल पेज	रु. 5000/– प्रति माह
2.	ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज	रु. 2000/– प्रति माह
3.	ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज	रु. 1000/– प्रति माह

पवमान पत्रिका के रेट्स

1.	मासिक मूल्य (1 पत्रिका)	रु. 20/– एक प्रति
2.	वार्षिक मूल्य (12 प्रतियाँ प्रति वर्ष)	रु. 200/– वार्षिक
3.	15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य	रु. 2000/–

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

पाखण्ड और अन्धविश्वास का खण्डन कैसे हो?

महर्षि दयानन्द सरस्वती पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पाखण्ड और अन्धविश्वास का सबसे पहले खण्डन किया और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने उनके इस मिशन को सतत जारी रखा है। अप्रैल 1867 के कुम्भ मेले से महर्षि ने समाज सुधार का कार्य आरम्भ किया। समाज में व्याप्त पाखण्ड, अन्धविश्वास, कुरीतियों, गुरुडम, आडम्बर, जातिवाद, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, सतीप्रथा, बालविवाह, जादू–टोना आदि कुप्रथाओं के विरुद्ध उन्होंने सारे देश के भिन्न–भिन्न स्थानों में घूमघूम कर घोर प्रचार करते हुए आवाज बुलन्द की। अपने विचारों को महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश नामक अपने कालजयी ग्रन्थ में उल्लिखित किया और 10 अपैल 1875 को इस उद्देश्य से आर्य समाज की स्थापना की। आर्यसमाज ने मनुस्मृति में प्रतिपादित वर्ण–व्यवस्था स्थापित करने का बीड़ा उठाया है। इस दिशा में हमारी प्रगति क्या है? क्या हमने अपने गुरुकुलों में कभी मनुस्मृति आदि शास्त्रों में प्रतिपादित सिद्धान्तों के आधार पर समावर्त्तन संस्कार कराकर अन्तेवासी छात्रों को ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण आबंटित किए हैं? क्या हम यह निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि हमारे घर में कोई मर्तिपूजा नहीं करता है। इन प्रश्नों में से किसी भी एक प्रश्न का सकारात्मक उत्तर हमारे पास सम्भवतः नहीं है। हम दिन में यदि दो बार संध्या करते हैं तो बारह बार और एक बार संघ्या करने पर छः बार कहते हैं कि जो कोई हमसे द्वेष करता है और हम जिससे द्वेष करते हैं, उस द्वेषभाव को हम ईश्वर के मुख अर्थात् न्याय व्यवस्था में रखते हैं। हम इस संकल्प पर विचार न करते हुए, आपसी द्वेष के कारण फिरकों में बंट रहे हैं और मुकदमे बाजी कर रहे हैं। क्या यह हमारा मिथ्याचार नहीं है। यह हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम आत्मावलोकन करें। आर्यसमाज के नियमों के अनुकूल जीवन बिताना हमारा परम धर्म है। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश की रचना अन्ध–विश्वासों, पाखण्डों, भ्रान्तियों, मत–मतान्तरों के अवैज्ञानिक प्रलापों का घोर खण्डन करने के लिए की थी। सत्यार्थप्रकाश का संदेश आज पहले से अधिक प्रासंगिक है क्योंकि प्रचार–प्रसार के दूर–दर्शन आदि माध्यमों से समाज में आडम्बर और पाखण्ड पहले से अधिक बढ़ गया है। उषाकाल प्रारम्भ होने के साथ ही अनेक चैनलों पर पाखण्डियों का प्रचार प्रारम्भ हो जाता है। इन दिनों हिन्दू समाज में पाखण्डप्रियता खूब फैल रही है। इनमें अन्धविश्वास, फलित ज्योतिष का मायाजाल, ढोंगी साधुओं की करामातें, तान्त्रिकों के द्वारा महिलाओं का यौनशोषण आए दिन समाचार पत्रों और दूरदर्शन के समाचारों में छाए रहते हैं। हिन्दुओं की धर्मदृष्टि दर्शन, कर्मकाण्ड और अध्यात्म जैसे गम्भीर विषयों पर न तो वैज्ञानिक है और नहीं तार्किक। वेद और अध्यात्म से तो हम कोशों दूर है। अन्धविश्वास तो दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। इसका हमें घोर खण्डन करना है परन्तु इससे पूर्व अपने अन्दर के आडम्बरों और पाखण्डों को भी समूल नष्ट करना होगा, इस संकल्प के साथ यह पाखण्ड–खण्डन विशेषांक सुधि पाठकों की सेवा में समर्पित है। इस अंक के साथ ही सम्पादक मण्डल की यह टीम पांचवें वर्ष में प्रवेश कर रही है। पत्रिका के अंकों को समय से प्रकाशित कराकर सुधी पाठकों तक पहुंचाने में सचिव महोदय का मुख्य योगदान रहता है। एतदर्थ सभी का आभार प्रकट करते हुए आगे भी आपकी सेवा में तत्पर रहने का संकल्प करते हैं।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

वेदामृत

अकेला खानेवाला पापी

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी।।
-ऋ० 10 । 117 । 6

ऋषिः- **आङ्गिरसो भिक्षुः।।** देवता-**इन्द्रः, धनान्नदानप्रशंसा।।** छन्दः-**त्रिष्टुप्।।**

विनय-संसार में धनी दिखनेवाले दुर्बुद्धि (पापबुद्धि) मनुष्यों के पास जो अन्न-भण्डार और नाना भोग-सामग्री दिखाई देती है, क्या वह भोग्य-सामग्री है? अरे, वह सब भोग-विलास का सामान तो उनकी 'मौत' है। वे भोग्य-वस्तुएँ नहीं हैं, किन्तु उनको खा जाने वाले ये इतने उनके भोक्ता हैं, भक्षक हैं। भोग्य-सामग्री का मनोहर रूप धर के आया हुआ उनका काल है, उन्हें खा जाने के लिए आया हुआ काल है। मनुष्यों! तुम्हें इस विचित्र बात पर विश्वास नहीं होता होगा, किन्तु मैं सच कहता हूँ, सच कहता हूँ और फिर सच कहता हूँ कि पापी, दुर्बुद्धि पुरुष के पास एकत्र हुआ सब सांसारिक भोग का सामान उसकी मृत्यु का सामान है, केवल मृत्यु का ही सामान है; इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है, क्योंकि वह पुरुष अपने इस धन-ऐश्वर्य द्वारा केवल अपने देह को ही पोषित करता है। न तो वह उस द्वारा अपने अन्य मनुष्य-भाईयों को पोषित करके अपने स्वाभाविक यज्ञ-धर्म को पालता है, न ही वह अर्यमादि देवों के लिए आहुति देकर आधिदैविक जगत के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित रखता है। यदि वह आधिदैविक आदि जगत् को पोषित करता हुआ इसके यज्ञ-शेष से अपने को पोषित करे, तब जो भोग-सामग्री उसके लिए अमृत हो सकती थी, वही भोग-सामग्री उसकी 'मौत' बन जाती है। मनुष्यो! याद रक्खो कि अकेला भोगनेवाला, औरों को बिना खिलाये स्वयमेव अकेला भोगनेवाला मनुष्य, केवल पाप को ही भोगता है। जबकि चारों ओर असंख्य पुरुष एक समय भी भरपेट भोजन न पा सकने वाले, भूखे-नंगे, झोंपड़ों में पड़े हों तो उनके बीच में जो हलुवा-पूरी खानेवाला, महल में रहनेवाला पलंग पर सोनेवाला 'अप्रचेताः' पुरुष है उससे तुम क्यों ईर्ष्या करते हो? तुम्हें बेशक वह मज़े में हलुवा-पूरी खाता हुआ दिखाई देता है, पर तनिक सूक्ष्मता से देखो तो वह बेचारा तो केवल अपने पाप को भोग रहा होता है, वह केवल शुद्ध पाप का भागी होता है और इस अयज्ञ के भारी पाप-बोझ को वह अकेला ही उठाता है; इसमें उसका कोई और साथी नहीं होता। "**केवलाघो भवति केवलादी**" यह संसार का परम सत्य है। इसे कभी मत भूलो! (शरीर, मन और आत्मा तीनों को पुष्ट करनेवाले) सच्चे भोजन में और (शीघ्र ही विनाश को पहुँचा देने वाले) पापमय भोजन में भेद करो! पाप से सना हुआ हलुवा-पूरी खाने की अपेक्षा रूखा-सूखा खाना या भूखा रहना हजारों गुणा श्रेष्ठ है। पहले प्रकार का भोजन मौत है; दूसरा अमृत है।

शब्दार्थ- अप्रचेताः=दुर्बुद्धि मनुष्य **मोघम्**=व्यर्थ ही **अन्नम्**=भोग-सामग्री को **विन्दते**=पाता है। **सत्यं ब्रवीमि**=सच कहता हूँ कि **सः**=वह भोग-सामग्री **तस्य**=उस मनुष्य के लिए **वध इत्**=मृत्युरूप ही होती है-उसका नाश करने वाली ही होती है। ऐसा दुर्बुद्धि **न अर्यमणं पुष्यति**=न तो यज्ञ द्वारा अर्यमादि देवों की पुष्टि करता है **नो सखायम्**=और न ही मनुष्य-साथियों की पुष्टि करता है। सचमुच वह **केवलादी**=अकेला खाने-भोग करने वाला मनुष्य **केवलाघो भवति**=केवल पाप को ही भोगने वाला होता है।

अवतारवाद और मूर्तिपूजा हैं सबसे बड़े पाखण्ड

—डा० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवतार शब्द 'अव' पूर्वक 'तॄ' धातु से बनता है। 'अव' का अर्थ रक्षा करना और तॄ' का अर्थ उतरना है। इस प्रकार भगवान् अवतार लेकर भक्तों की रक्षा करता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने कालजयी ग्रन्थ में एक शंका, जिसमें यह प्रश्न किया गया था कि शिव, विष्णु, गणेश, सूर्य और देवी आदि के शरीर धारण करके राम, कृष्ण आदि अवतार हुए हैं, इससे उनकी मूर्ति बनती हैं, क्या यह बात भी झूठी है? का उत्तर देते हुए कहते हैं कि यह बात झूठी है क्योंकि 'अज एकपात्' और 'अकायम्' इत्यादि विशेषणों से परमेश्वर का जन्म, मरण और शरीर धारण रहित होना वेदों में कहा गया है। युक्ति से भी परमेश्वर का अवतार कभी नहीं हो सकता है कयोंकि जो आकाशवत् सर्वत्र व्यापक, अनन्त और सुख, दुःख, दृश्यादि गुणों से रहित है, वह एक छोटे से वीर्य, गर्भाशय और शरीर में क्योंकर आ सकता है? वह है जो सर्वदेशीय हो और जो अचल व अदृश्य हो। जिसके बिना एक परमाणु भी खाली नहीं है, उसका अवतार कहना मानो वन्ध्या के पुत्र का विवाह कर उसके पौत्र के दर्शन करने की बात कहना है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती 31 जुलाई, सन् 1879 को बदायूं पधारे थे। इसी दौरान माह अगस्त के प्रथम सप्ताह में सम्भवतः 5 अगस्त के बाद किसी दिन उनका पण्डित रामप्रसाद और पण्डित वृन्दावन से शास्त्रार्थ हुआ था। इसमें पण्डित रामप्रसाद ने कहा कि स्वामी जी—ऐसा न समझना चाहिए कि परमेश्वर अवतार नहीं लेता और यह वेद विरुद्ध है। पण्डित रामप्रसाद ने विष्णु का वामन अवतार सिद्ध करने के लिए निम्न मंत्र उद्धरित किया—

''इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्''

महर्षि ने इसके उत्तर में बताया कि इस मंत्र से वामन अवतार होना सिद्ध नहीं होता है। इसका अर्थ है कि परमेश्वर अपनी सामर्थ्य से सब जगत् को तीन स्थानों में स्थापन करके धारण करता है। यह नहीं कि परमेश्वर ने तीन चरण रखे, जैसा कि पण्डित रामप्रसाद कह रहे थे। पण्डित वृन्दावन ने इस पर माना कि विष्णु साकार नहीं है। स्वामी जी ने इसके उपरान्त दोनों पण्डितों से, 'विष्णु' पद किस धातु से बना है उसके आधार पर अर्थ करवाया। पण्डित वृन्दावन ने स्पष्ट किया कि विष्णु पद ''विष्लृ व्याप्तौ'' धातु से बनता है अर्थात् जो सर्वव्यापक है, उसे विष्णु कहते हैं। स्वामी जी ने सिद्ध कर दिया कि जो व्यापक है, वह साकार कैसे हो सकता है। इस प्रकार ईश्वर का अवतार लेना वेद के विरुद्ध कथन है।

वेद में अनेक मंत्र परमात्मा के जन्म लेने का विरोध करते हैं, जैसे—

अजो न क्षां दाधार पृथिवीं तस्तम्भ द्यां मन्त्रेभिः सत्यैः।
प्रिया पदानि पश्वो नि पाहि विश्वायुरग्ने गुहं गुहं गाः।।
(1/67/3)

उपरोक्त मंत्र का भावार्थ यह है कि जैसे न जन्म लेने वाला परमेश्वर न टूटने वाले विचारों से पृथिवी को धारण करता है, विस्तृत अन्तरिक्ष तथा द्युलोक अथवा सूर्यादि तेजस्वी पदार्थों को गिरने से रोकता है, प्रीतिपूर्वक प्राप्तव्य पदार्थों को देता है, सम्पूर्ण आयु देने वाला बन्धन से सर्वथा छुड़ाता है। बुद्धि में स्थित हुआ वह गुह्य पदार्थों को जानता है, वैसे ही विद्वान् जीव! तू भी हमें अज्ञान आदि से छुड़ा कर प्राप्तव्य को प्राप्त करा।

पौराणिक बन्धु राम, कृष्ण आदि को परमात्मा का अवतार मानते हैं और यह मानते हैं कि उनके शरीरों में भी जीवात्मा था। यदि वे परमात्मा थे तो उनमें जीवात्मा नहीं होना चाहिए था। यदि जीवात्मा भी था तो वे दूसरे मनुष्यों के समान ही थे। फिर परमात्मा और जीवात्मा में क्या

भेद रहा? यदि उनके शरीर में परमात्मा ही था तो परमात्मा ने ऐसा कौन सा कर्म किया था कि उसे राम, कृष्ण आदि का मानव शरीर धारण करना पड़ा। राम स्वयं कहते हैं कि–

कि मया दुष्कृतं कर्म कृतमन्यत्र जन्मनि।
येन मे धार्मिको भ्राता निहतश्चाग्रतः स्थितः।।
–वा०रा०यु०स०101

अर्थात् मैंने दूसरे जन्म में कौन सा ऐसा बुरा कर्म किया था कि जिसके कारण मेरा धार्मिक भाई मेरे सामने मरा पड़ा है।

अब प्रश्न यह उठता है कि जब प्रत्येक जीव के जन्म और मृत्यु सम्बन्ध उस परमपिता परमेश्वर के हाथ में है तो वह किसी भी जीव का किसी भी क्षण विनाश कर सकता है या अपनी ईश्वरीय व्यवस्था के अन्तर्गत करवा सकता है, उसे फिर मनुष्य के रूप में जन्म लेने की क्या आवश्यकता है?

मूर्तिपूजा :–

संसार में मूर्ति पूजा का इतिहास ज्ञात करने पर पता चलता है कि जैन–बौद्ध–काल से पूर्व इसका आरम्भ नहीं हुआ था। चीन के प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता और यात्री फाहियान ने सन् 400 ई0 में भारत की यात्रा की थी। उसने देखा था कि पटना में प्रतिवर्ष दूसरे मास के आठवें दिन मूर्तियों की एक सवारी निकाली जाती थी। उसका रूप आजकल की, जगन्नाथ यात्रा में निकाली जाने वाली मूर्तियों की रथ यात्रा के समान था। फाहियान की यात्रा के लगभग 240 वर्ष बाद सन् 640 ई0 में दूसरा चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया। उसके आगमन के समय तक हिन्दुओं में भी मूर्ति पूजा का प्रचलन हो चुका था। कुछ विद्वानों का मत है कि सबसे पहले मूर्ति पूजा जैनियों ने प्रारम्भ की और बौद्धों ने जैनियों से मूर्ति पूजा करना सीखा। हिन्दुओं ने जैनियों और बौद्धों से मूर्ति पूजा करना सीखा था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार पाषाणदि मूर्ति पूजा जैनियों से प्रचलित हुई। मूर्ति पूजा के प्रारम्भ के समय के सम्बन्ध में विद्वानों के मतों में थोड़ा–बहुत अन्तर हो सकता है परन्तु यह निर्विवादित तथ्य है कि वैदिक काल से लेकर महाभारत काल पर्यन्त इस देश में किसी प्रकार की मूर्ति पूजा नहीं की जाती थी। विचारणीय विषय यह है कि मूर्ति पूजा का आरम्भ क्यों हुआ?

महर्षि सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें सम्मुलास में लिखते हैं– ''जब बडे–बड़े विद्वान्, राजा, महाराजा, ऋषि, महर्षि लोग महाभारत युद्ध में बहुत से मारे गए और बहुत से मर गए तब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट हो चला। ..... केवल जीविकार्थ पाठमात्र ब्राह्मण लोग पढ़ते रहे सो पाठमात्र भी क्षत्रिय आदि को न पढ़ाया, क्योंकि जब अविद्वान् हुए गुरु बन गए तब छल, कपट, अधर्म भी उनमें बढ़ता चला। ब्राह्मणों ने विचारा कि अपनी जीविका का प्रबन्ध बाँधना चाहिए। सम्मति करके यही निश्चय कर क्षत्रिय आदि को उपदेश करने लगे कि हम ही तुम्हारे पूज्यदेव हैं। बिना हमारी सेवा किए तुमको स्वर्ग या मुक्ति नहीं मिलेगी। किन्तु जो तुम हमारी सेवा न करोगे तो घोर नरक में पड़ोगे। जो–जो पूर्ण विद्या वाले धार्मिकों का नाम ब्राह्मण और पूजनीय वेद और ऋषि–मुनियों के शास्त्र में लिखा था उनको अपने मूर्ख, विषयी, कपटी, लम्पट, अधर्मियों पर घटा बैठे। भला, वे आप्त विद्वानों के लक्षण इन मूर्खो में कब घट सकते हैं? परन्तु जब क्षत्रियादि संस्कृत विद्या से अत्यन्त रहित हुए तब उनके सामने जो–जो गप्प मारी सो–सो बेचारों ने मान ली। तब इन नाम मात्र के ब्राह्मणों की बन पड़ी। सबको अपने वचन–जाल में बाँधकर कहने लगे कि– ब्रह्मवाक्यं जनार्दनः । (पाण्डव गीता)

वेदों में मूर्ति पूजा का अत्यन्त निषेध–वेदों में मूर्ति पूजा का कोई विधान नहीं है। वेद में तो स्पष्ट घोषणा की गई है–

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः।

अर्थात् जिसका नाम महान् यशवाला है, उस परमात्मा की कोई प्रतिमा परिमाण सादृश्य वा मूर्ति नहीं है।

महर्षि लिखते हैं कि वेदों में परमेश्वर के स्थान पर अन्य पदार्थ को पूजनीय मानने का सर्वथा निषेध किया गया है।

महर्षि, स०प्र० एका० समु० में एक शंका 'मूर्ति पूजा में पुण्य नहीं तो, पाप तो नहीं है।' का उत्तर देते हैं–'कर्म दो प्रकार के होते हैंः–एक विहित– जो कर्त्तव्यता से वेद में, सत्यभाषाणदि प्रतिपादित हैं। दूसरे निषिद्ध हैं। जैसे विहित का अनुष्ठान करना वह धर्म, उसका न करना अधर्म है, वैसे ही निषिद्ध कर्म करना अधर्म और न करना धर्म है। जब वेदों से निषिद्ध मूर्तिपूजादि कर्मों को तुम करते हो तो पापी क्यों नहीं?

पुराणों के अनुसार मूर्ति पूजा का स्वरूप–

जहां पुराणों में अनेक स्थानों पर मूर्ति पूजा का विधान मिलता है और एक दृष्टि से देखा जाए तो पुराणों की रचना ही अवतारवाद की स्थापना और मूर्ति पूजा को शास्त्रीय रूप देने के लिए की गई थी, वहीं इन ग्रन्थों में मूर्ति पूजा का अत्यन्त निषेध मिलता है। समस्त अठारह पुराणों का प्रणयन महर्षि वेद व्यास द्वारा किया जाना बताया गया है परन्तु सभी में न केवल सृष्टि के उत्पन्न होने के विषय में भिन्न–भिन्न कथाएं दी गई हैं अपितु प्रत्येक पुराण में दूसरे पुराण के आराध्य देवता की पूजा करने का घोर विरोध किया गया है। निम्न उदाहरण सुधि पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं–

पुराणों में मूर्ति पूजा का निषेध–

१– श्रीमद्भागवत, स्कं0 १०, अ0 ८४ में कहा गया है कि पत्थरों की मूर्तियां देवता नहीं होतीं। वे बहुत काल में भी पवित्र नहीं करती हैं।

२– श्रीमद्भागवत, स्कं0 ३, अ0 २९/२१–२२ में कहा गया है कि सर्वप्राणियों में जीवात्मा रूप में मैं व्याप्त रहता हूँ। जो मेरा निरादर करके मूर्ति का पूजन करते हैं, यह विडम्बना है। मैं सबकी देह में रहने वाला हूँ। जो मनुष्य मुझे त्याग कर प्रतिमा का पूजन करते हैं, वे अपनी अज्ञानता से राख में हवन करते हैं।

३– देवी भागवत, स्कं0 ९, अ0 ७/४२ में कहा गया है–

न ह्यम्बमयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः।
ते पुनन्त्यपि कालेन विष्णुभक्ता क्षणादहो।।

अर्थात् पानी के तीर्थ नहीं होते, मिट्टी और पत्थरों के देवता नहीं होते, वे किसी काल में भी पवित्र नहीं करते हैं।

परमेश्वर का सच्चा स्वरूप

परमेश्वर सच्चिनन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, सर्वव्यापक और नित्य आदि अनेकानेक गुणों से युक्त है। परमेश्वर आप्त–काम और पूर्णकाम है। परमात्मा में कोई कामना नहीं है जिसे उन्हें पूरा करना हो। अथर्ववेद में परमात्मा के विषय में कहा गया है–

अकामो धीरो अमृतः स्वयंभू रसेन तृप्तो न कुतश्चनेनः। अथर्व0 10.8.44

इस मंत्र का भावार्थ यह है कि परमेश्वर अकाम हैं, अर्थात् सारी कामनाओं से रहित हैं, उन्हें अपने लिए किसी वस्तु को प्राप्त नहीं करना है, वे धीर हैं, संसार के किसी भी परिवर्तन से उनमें कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, वे सदा एक–रस रहते हैं, वे अपनी समावस्था को नहीं खोते हैं, वे मृत्यु से रहित हैं, स्वयंभू हैं– अपनी सत्ता का हेतु स्वयं ही हैं, उनकी सत्ता में और कोई कारण नहीं है, उन्हें किसी ने बनाया नहीं है, वे सदा से स्वयं ही चले आ रहे हैं, वे आनन्द से तृप्त हैं, परिपूर्ण हैं अर्थात् कहीं से भी किसी प्रकार की कमियों वाले नहीं हैं। वेद मे ऐसे ही परमेश्वर की उपासना का संदेश दिया गया है। अस्तु पाखण्ड और धर्मान्धता को त्याग कर सच्चे परमेश्वर की उपासना करना ही मनुष्यों का परम उद्देश्य होना चाहिए।

धार्मिक व सामाजिक अंधविश्वास व पाखण्डों का कारण अविद्या है

–मनमोहन कुमार आर्य

हमारे देश में अनेक प्रकार के धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड प्रचलित हैं। इन अन्धविश्वास एवं पाखण्डों का कारण देश में प्रचलित सभी मत–मतान्तरों की अविद्या है। इस अविद्या के कारण अनेक प्रकार की कुरीतियां भी प्रचलित हैं और सामाजिक विद्वेष उत्पन्न होने सहित किन्हीं दो समुदायों में हिंसा भी होती रहती है। अन्धविश्वासों व पाखण्डों का कारण अविद्या है, यह सत्य होने पर भी कोई मत–मतान्तर इसे स्वीकार नहीं करता। सभी मतों के आचार्य एवं उनके अनुयायी मुख्यतः अविद्या एवं अपने–अपने प्रयोजन की सिद्धि आदि के कारण जानबूझकर भी सत्य वैदिक मत को स्वीकार नहीं करते। यह भी तथ्य है कि महाभारतकाल के बाद लोगों के आलस्य व प्रमाद के कारण वैदिक धर्म का सत्यस्वरूप विकृत व विलुप्त हो गया था। लोगों ने वेदाध्ययन करने में प्रमाद किया जिससे सत्य वेदार्थ विलुप्त होते गये। कुछ स्वार्थी प्रकृति के लोगों ने अपनी अविद्या के कारण वेदों के मिथ्या व भ्रान्तियुक्त अर्थ भी किये जिससे समाज में मिथ्या विश्वासों की वृद्धि हुई। समय बीतने के साथ समाज में अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड तथा सामाजिक कुरीतियों में वृद्धि होती गई। बौद्ध काल में महात्मा बुद्ध ने मुख्यतः यज्ञ में पशु हिंसा एवं अन्य कुप्रथाओं का विरोध किया। उनकी मृत्यु के बाद उनके अनुयायियो ंने बौद्धमत की स्थापना की। इसी कालावधि में देश में महावीर स्वामी के अनुयायियों ने जैनमत की भी स्थापना की। लोग वैदिक मत छोड़कर नव–बौद्ध–मत व जैनमत को स्वीकार करने लगे। कालान्तर में स्वामी शंकराचार्य जी का आविर्भाव हुआ। उन्होंने बौद्ध व जैन मत की ईश्वर के अस्तित्व को न मानने के सिद्धान्त को वेद विरुद्ध होने के कारण उनसे शास्त्रार्थ करके उनकी मान्यताओं का खण्डन किया और विजयी हुए। इसके परिणाम स्वरूप तत्कालीन जैनी वा बौद्धमत के राजाओं ने स्वामी शंकराचार्य के अद्वैतमत को स्वीकार किया। इससे बौद्ध व जैन मत पराभव को प्राप्त हुए और स्वामी शंकराचार्य का मत देश भर में प्रचलित हुआ। ऐसा होने पर भी देश व समाज से अज्ञान व अन्धविश्वास आदि समाप्त न हुआ और अल्पकाल में ही स्वामी शंकर की मृत्यु के कारण बौद्ध व जैन मत पुनः प्रभावशाली होने लगे। बौद्ध व जैन मत भी सत्य पर आधारित न होने के कारण वह भी सर्वमान्य नहीं हुए। वैदिक मत के सत्यस्वरूप के विकृत होने के कारण अन्धविश्वास व मिथ्या परम्पराओं में वृद्धि होती गई। कालान्तर में देश में 18 पुराणों का प्रचलन हुआ जिससे अनेक पौराणिक मत अस्तित्व में आये। मुख्य मत शैव, वैष्णव व शाक्त थे। कालान्तर में इनकी भी अनेक शाखायें हुईं और अन्य अनेक नये मत प्रचलित हो गये जिनका आधार सत्य ज्ञान न होकर अविद्या थी। स्वामी दयानन्द (1825–1883) के समय तक देश में मत–मतान्तरों की वृद्धि के साथ अन्धविश्वासों व कुप्रथाओं में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई और आज भी यह क्रम बढ़ता ही जा रहा है।

संसार में जितने भी मत–मतान्तर हैं उनमें कुछ ज्ञानपूर्वक मान्यतायें भी हैं, वह सब मतों में सामान्य हैं। मत–मतान्तरों की जो

मान्यतायें भिन्न व परस्पर विरुद्ध हैं, उसका कारण अज्ञान वा अविद्या है। **धर्म सार्वभौमिक सत्य सिद्धान्तों को कहते हैं जिनका प्रतिपादन सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने वेदों में किया है। वेद की सभी बातें व सिद्धान्त सत्य पर आधारित हैं। हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने वेद के सिद्धान्तों की परीक्षा कर इसे सत्य व धर्म का मूल सिद्ध किया था। ऋषि दयानन्द ने अपने समय में भी वेदों के सिद्धान्तों को समग्रता व सम्पूर्णता से सत्य पाया और उसका प्रचार किया। उन्होंने डिन्डिम घोष कर कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इसके साथ उन्होंने यह सिद्धान्त भी दिया कि 'सब सत्य विद्या (चार वेद) और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है।'** इसका अर्थ यह है कि चार वेद और सृष्टि के पदार्थ जिन्हें हमारे विद्वान व वैज्ञानिक विद्या से जानते हैं उन सब पदार्थों का आदि मूल अर्थात् रचयिता, उन्हें बनानेवाला व पालक परमेश्वर है। वेदों के आधार पर ऋषि दयानन्द ने ईश्वर व जीवात्मा का सत्य स्वरूप भी जनसमुदाय के सम्मुख रखा और घोषणा की कि **''ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।''** आज भी कोई मत व उनका बड़ा या छोटा आचार्य और वैज्ञानिक ऋषि दयानन्द के इस सत्य सिद्धान्त को झुठला नहीं पाया। इससे ईश्वर विषयक यह सिद्धान्त सत्य सिद्ध हुआ है।

जीवात्मा अर्थात् मनुष्यात्मा व प्राणिमात्र की आत्मा के विषय में ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के **'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश'** में लिखा है कि **जो इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख और ज्ञानादि गुणयुक्त अत्पज्ञ नित्य है उसी को 'जीव' मानता हूं।** उन्होंने जीव और ईश्वर के स्वरूप के विषय में आगे लिखा कि जीव और ईश्वर स्वरूप और वैधर्म्य से भिन्न और व्याप्य–व्यापक और साधर्म्य से अभिन्न है अर्थात् जैसे आकाश से मूर्तिमान् द्रव्य कभी भिन्न न था न है, न होगा और न कभी एक था, न है, न होगा इसी प्रकार परमेश्वर और जीव को व्याप्य–व्यापक, उपास्य–उपासक और पिता–पुत्र आदि सम्बन्धयुक्त मानता हूं। ऋषि दयानन्द अभाव से भाव का उत्पन्न होना व भाव का अभाव होना नहीं मानते। यह आधुनिक विज्ञान का नियम भी है कि हर पदार्थ की उत्पत्ति का कोई एक व कुछ उपादान कारण होते हैं। उस उपादान कारण से ही ज्ञान व शक्ति का प्रयोग कर कोई चेतन सत्ता, ईश्वर व मनुष्य, नया पदार्थ बना सकते हैं। ऋषि दयानन्द ने भी दर्शनों के आधार पर इस सृष्टि का निमित्त कारण ईश्वर तथा उपादान कारण प्रकृति को बताया हैं। वैदिक सिद्धान्तों से भी कारण–कार्य सिद्धान्त पुष्ट होता है। यह भी महत्वपूर्ण बात है कि किसी वेद में अन्य मत–मतान्तरों के ग्रन्थों की तरह यह नहीं लिखा व कहा है कि ईश्वर ने कहा कि **'हो जा' या 'बन जा'** और इतना कहने मात्र से ही यह ब्रह्माण्ड बन गया। ऐसा कहना व मानना अज्ञानता व सत्य का परिहास है। महर्षि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों का किसी भी मत व वैज्ञानिकों ने खण्डन नहीं किया। उनमें खण्डन की क्षमता है भी नहीं। **हमारा मत है कि जो बात तर्क व युक्ति से सिद्ध हो वह सत्य होती है और वही विज्ञान भी है।** ईश्वर व जीवात्मा के सम्बन्ध में वेद, दर्शन और ऋषि

दयानन्द सहित हमारे सभी ऋषि पर्याप्त प्रमाण देते हैं। अतः संसार में वेद और वैदिक सिद्धान्त, जो महर्षि दयानन्द आदि ऋषियों के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश आदि में वर्णित हैं, वह पूर्ण सत्य व पूरे विश्व के सभी लोगों के लिए मान्य व स्वीकार्य होने चाहिये। इन्हें मानकर ही देश व समाज सुखी हो सकता है और साथ ही कल्याण को प्राप्त हो सकता है। समस्त मानव समाज मिथ्या अन्धविश्वासों सहित पाखण्डों से मुक्त भी हो सकता है।

अन्धविश्वास का अर्थ होता है कि किसी असत्य, लाभरहित अथवा हानिकारक मान्यता व सिद्धान्त को सत्य स्वीकार कर उसका आचरण करना। ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वातिसूक्ष्म, निराकार, सर्वशक्तिमान, अजन्मा आदि गुणों वाला है। सर्वव्यापक व निराकार स्वरूप वाले ईश्वर की मूर्ति व आकृति कदापि नहीं बनाई जा सकती। ईश्वर प्रत्येक स्थान पर होने से मूर्ति के अन्दर व बाहर दोनों स्थानों पर होता है। फिर मूर्ति के बाहर स्वीकार न करना व उसे दृष्टि से ओझल करना, मूर्ति से बाहर उसका ध्यान न करना, ईश्वर को मूर्ति में ही मानना तथा उस पाषाण जड़ मूर्ति से अपनी इच्छाओं की पूर्ति व कामनाओं को सफल होना मानना यह घोर अविद्या व अज्ञान है। ऋषि दयानन्द और वेदों की मान्यता है कि हम मूर्ति की कितनी भी पूजा कर लें, उससे हमें किसी प्रकार के सुख व कामना पूर्ति आदि का कोई लाभ नहीं होता। इसके स्थान पर यदि हम ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापक, सर्वत्र उपलब्ध वा विद्यमान तथा सर्वशक्तिमान मानकर गायत्री मन्त्र आदि से उसका ध्यान, प्रार्थना व उपासना करते हैं तो इससे ईश्वर हमारी प्रार्थना को स्वीकार करता है। **फलित ज्योतिष भी मिथ्या ज्ञान है। इसको मानने से मनुष्य अपनी हानि ही करता है, लाभ इससे कुछ होता नहीं। आज विज्ञान ने विश्व में जो उन्नति की है वह फलित ज्योतिष की उपेक्षा करके ही की है। हर्ष का विषय है कि हमारे वैज्ञानिक भी फलित ज्योतिष को नहीं मानते।** विवाह के अवसर पर जन्म पत्रियों का मिलान फलित ज्योतिष की मान्यताओं के आधार पर करते हैं। इस कारण कई योग्य वर–वधुओं के विवाह नहीं हो पाते। हमने ऐसे ज्योतिषी भी देखें हैं जिन्होंने किसी वृद्ध महिला को बताया कि तुम्हारे परिवार में पुत्र के यहां पुत्र उत्पन्न न होगा। वह महिला मर गई और उसके बाद उसके पुत्र के यहां दो पुत्र हो गये। वेदों के ऋषि दयानन्द ने भी फलित ज्योतिष को मिथ्या और देश की गुलामी का प्रमुख कारण माना है।

मृतक श्राद्ध भी मिथ्या मान्यता है। मरने के बाद जीवात्मा का पुनर्जन्म हो जाता है या फिर लाखों व करोड़ों आत्माओं में किसी एक धर्मात्मा व वेदज्ञानी मनुष्य की आत्मा का मोक्ष होता है। अन्य सब आत्माओं का पुनर्जन्म होना निश्चित है। जिस आत्मा का पुनर्जन्म हो गया उसे भोजन जहां उसका जन्म हुआ है, वहां उसके माता–पिता आदि व वह स्वयं पुरुषार्थ कर प्राप्त करेगा। यहां से बिना पते के भोजन वहां कदापि नहीं पहुंच सकता। वर्ष में एक दो बार भोजन बनाकर अग्नि में डाल देने से मृतक का पूरे वर्ष के लिए पेट नहीं भर सकता। यदि यह मान लें कि मृतक आत्मा का जन्म नहीं हुआ तो भी उस अजन्मी आत्मा को तो भोजन की आवश्यकता ही नहीं होगी। भोजन की आवश्यकता तो शरीर को होती है न कि आत्मा को। **अतः मृतक श्राद्ध भी अन्धविश्वास व पाखण्ड है और इसे कुछ लोगों ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए बनाया हुआ प्रतीत होता है।** जन्मना जातिवाद भी एक बहुत बड़ा

अन्धविश्वास व कुपरम्परा है। अतीत में यह बहुत से निर्दोष लोगों पर सबल लोगों के अत्याचार का कारण बना है। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन काल में सबसे पहले इसका विरोध किया था। आज के आधुनिक युग में जन्मना जातिवाद जारी है। यह लोगों के अज्ञान व अविद्या के कारण ही विद्यमान है अन्यथा इसे आज और अभी समाप्त कर देना चाहिये। किसी को भी जन्मना जातिवाचक शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। अपने बच्चों के विवाह भी सबको गुण, कर्म व स्वभाव के आधार पर वैदिक धर्म के ही भीतर ही करने चाहियें। अविद्या और अन्धविश्वास केवल हिन्दूओं में ही नहीं हैं अपितु बौद्ध, जैन, ईसाई व मुसलमानों सहित सभी मत–मतान्तरों में भी हैं। ऋषि दयानन्द ने सत्य के निर्णयार्थ सत्यार्थप्रकाश में मत–मतान्तरों की अविद्या व अन्धविश्वासों का दिग्दर्शन कराया है। सभी समझदार व बुद्धिमान मनुष्यों को सत्यासत्य का विचार कर अन्धविश्वास और पाखण्डों सहित मिथ्या कुपरम्पराओं का त्याग करना चाहिये और सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ को पढ़कर एकमात्र सत्य वैदिक धर्म की शरण में आकर अपने जीवन को सुखी व कल्याण से युक्त करना चाहिये।

विनम्र अनुरोध

प्रिय बन्धुओं,

आपको अवगत कराते हुए अति हर्ष हो रहा है कि तपोवन आरोग्यधाम का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है तथा चिकित्सा सेवायें भी धीरे–धीरे गति पकड़ रही हैं। यह सब आपके सहयोग और आशीर्वाद के कारण ही सम्भव हो पाया है। आप अवगत हैं कि आश्रम द्वारा आयोजित उत्सवों एवं शिविरों में सम्मिलित होने वाले सभी साधक–साधिकाओं की हार्दिक इच्छा रहती है कि उन्हें भी यज्ञ में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हो जाये लेकिन कभी–कभी विपरीत मौसम के कारण शामियाना के नीचे स्थापित किये गये हवन कुण्डों पर यज्ञ करना सम्भव नहीं हो पाता क्योंकि वर्षा के कारण लगभग प्रतिवर्ष ही एक–दो दिन के लिए व्यवधान हो जाता है और मुख्य वेदी पर सभी यज्ञ प्रेमी सज्जनों को स्थान देना सम्भव नहीं हो पाता। इसलिए आश्रम के सम्मानीय अध्यक्ष जी तथा देहरादून के ही एक यज्ञ प्रेमी परिवार ने यह आग्रह किया है कि वर्तमान मुख्य यज्ञ वेदी के चारों ओर पक्का लिंटल डाल दिया जाये जिससे आंधी, तूफान और वर्षा में भी यज्ञ का कार्य निर्बाध रूप से चलता रहे। यज्ञशाला के विस्तारीकरण का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है जिसे 30 सितम्बर 2018 तक पूर्ण करने का प्रयास किया जायेगा। इस पुनीत कार्य को पूर्ण करने के लिए आपसे आर्थिक सहयोग की अपेक्षा है। आश्रम को दिया गया दान इन्कम टैक्स की धारा 80जी के अन्तर्गत कर मुक्त है। आपसे प्रार्थना है कि वैदिक साधन आश्रम के केनरा बैंक देहरादून के खाता संख्या 2162101001530, आईएफएससी कोड सीएनआरबी0002162 में दान राशि जमा कराकर आश्रम के कार्यालय में सूचित करने की कृपा करें ताकि आपको दान की रसीद भेजी जा सके।

निवेदक : इं. प्रेमप्रकाश शर्मा, सचिव, 9412051586

मूर्तिपूजा से देश का अधःपतन

—**आचार्य सूरत राम शर्मा,** वैदिक पुरोहित

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर महाभारत ..... पर्यन्त भारत में एक ईश्वर की उपासना का वैदिक विधान प्रचलन में रहा। दुर्भाग्यवश महाभारत के विनाशकारी युद्ध के पश्चात् जैन व बौध मत के कार्यकाल में मूर्तिपूजा का प्रचलन बढ़ा।

भारत की अवनति के जहाँ अनेक कारण रहे; उनमें मूर्ति पूजा व फलित ज्योतिष भी मुख्य कारण रहा। मूर्ति पूजा व फलित ज्योतिष ने देशवासियों को भाग्यवादी व अन्धविश्वासी बना दिया। एक ईश्वर की उपासना के स्थान पर लोग अनेक देवी—देवताओं की पूजा करने लगे। वेद मूर्तिपूजा का सर्वथा निषेध करता है। यजुर्वेद में स्पष्ट कहा गया है— **'न तस्य प्रतिमाऽस्ति'** उस परमेश्वर की जो महान यश वाला है, उसकी मूर्ति नहीं है न हो सकती है क्योंकि वह एकदेशी नहीं सर्वव्यापक है। सर्वव्यापक सत्ता की मूर्ति रूप में स्थापित करना वैसा ही है जैसे किसी चक्रवर्ती सम्राट को एक झोंपड़ी में कैद करना। यह उसका अपमान नहीं तो और क्या है?

इसी अन्धविश्वास के कारण यवन—आक्रान्ताओं ने भारत के मन्दिरों को तोड़कर देश की अपार सम्पदा को लूटकर ले गए। मोहम्मद गजनबी द्वारा सोमनाथ मन्दिर की लूट व मूर्तियों का भंजन प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना है, जिसे तोड़कर महमूद गजनवी भारत की आकूत सम्पदा हीरे, मोती जवाहारात के रूप में ऊँटों पर लादकर विदेश ले गया था। जो पोप पुजारी महा—अन्धविश्वासी थे, उन्होंने तत्कालीन राजाओं व क्षत्रियों को भी अन्धविश्वासी बना दिया। राजाओं से कहने लगे कि आप निश्चिन्त रहें। महादेव जी भैरव अथवा वीरभद्र को रक्षा के लिये भेज देंगे। वे सवा मलेच्छ यवनों को मार डालेंगे।

ज्योतिषी पोपों ने भी यह कहकर कि अभी तुम्हारा चढ़ाई करने का मुहूर्त नहीं है। एक ने आठवां चन्द्रमा बतलाया तो दूसरे ने योगिनी सामने दिखलाई और क्षत्रिय राजाओं को हतोत्साहित कर दिया। जब मलेच्छों की फौज ने आकर घेर लिया तब दुर्दशा के भय से भागने लगे। पुजारियों ने हाथ जोड़कर कहा कि तीन करोड़ रुपया ले लो पर मन्दिर और मूर्ति मत तोड़ो। पर वे तो मूर्ति पूजक नहीं मूर्ति भंजक थे। मन्दिर तोड़ा गया, मूर्ति नीचे गिर पड़ी। जब मूर्ति तोड़ी गई तो सुना जाता है कि अट्ठारह करोड़ के रत्न निकले। पुजारी और पोपों को कोड़ों से पीटा गया, उनसे पीसना पिसवाया गया, मलमूत्रादि उठवाया गया।

महर्षि दयानन्द दुःखी हृदय से अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं— 'क्यों पत्थर की पूजा कर सत्यानाश को प्राप्त हुए?

क्यों वेद की बात न मानकर परमेश्वर की भक्ति न की? जितना मूर्तियों पर अन्ध विश्वास करते रहे, उतना शूरवीरों पर विश्वास किया होता और उनकी पीठ थपथपाई होती तो निश्चित रूप से दुर्गति न होती अपितु अमूल्य सम्पदा की रक्षा होती।' इसीलिए महर्षि दयानन्द देशवासियों से आह्वान करते हैं— 'अभी भी समय है यदि राष्ट्र की उन्नति व समृद्धि चाहते हो तो वेदों की ओर लौटो, वेदों की शिक्षाओं पर आचरण करने से ही कल्याण सम्भव है।

श्रावणी पर्व एवं कृष्ण जन्माष्टमी

–मनमोहन कुमार आर्य

श्रावण का महीना वर्षा ऋतु का सबसे अधिक वर्षा वाला महीना होता है। आजकल तो देश में बड़े–बड़े नगर बस गये हैं। सुविधाजनक सड़के हैं व सड़कों पर विद्युत से मिलने वाले प्रकाश की व्यवस्था है। नगरों व ग्रामों में भी बसे एवं कारें चलती हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए रेलगाड़ियों एवं वायुयान की सेवायें भी हैं परन्तु प्राचीन काल में ऐसा नहीं था। तब हमारे देश में रथ होते थे। ऐसा अनुमान होता है कि वह घोड़ों से चलते थे। यांत्रिक रथ भी हो सकते हैं परन्तु उनका विस्तार नहीं मिलता। वेदों के अध्ययन से प्रतीत होता है कि उनमें यात्रिंक विमान, रथ व वाहन तथा समुद्रीय यान बनाने और देश–विदेश की यात्रा करने का उल्लेख है। प्राचीन काल में जब वर्षा होती थी तो नदियों में जल भरा होता था। वर्षा से लोगों का आवागमन अवरुद्ध हो जाता था। गांवों में तो आवागमन अत्यन्त कठिन होता होगा, ऐसा अनुमान होता है। प्राचीन साहित्य में ऐसे संकेत नहीं मिलते कि रामायण और महाभारत काल में भारत में फोन व मोबाइल की सेवायें उपलब्ध थी जैसी वर्तमान में हैं। अतः हमारे पूर्वज प्राचीन काल में वर्तमान की तरह का जीवन व्यतीत नहीं कर पाते होंगे, ऐसा हमारा अनुमान है। आजकल अनेक सुविधायें होने के बावजूद देश के अनेक भागों में बाढ़ आ जाया करती है जिससे अनेक गांव व नगर प्रभावित होते हैं। अतः इन सब परिस्थितियों में हमारे मनीषि पूर्वज इन दिनों स्वाध्याय व विद्वानों के प्रवचन सुनने के लिए उपयुक्त अवसर जानकर पूरे माह विद्वानों के प्रवचनों का श्रवण करने सहित स्वाध्याय आदि किया करते थे। श्रावण मास के अन्तिम दिन पूर्णमासी को **'श्रावणी पर्व'** का उत्सव मनाया जाता था। अनुमान से कह सकते हैं कि इस दिन वृहद यज्ञ किये जाते थे और विद्वानों के द्वारा मनुष्यों को ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप व गुण, कर्म व स्वभाव का परिचय कराकर उन्हें जीवात्मा के जन्म–मरण व बन्धन और मोक्ष का ज्ञान कराया जाता था। पाप व पुण्य के विषय में भी बताया जाता था और पुण्य से जन्म जन्मान्तर में उन्नति और पाप से इस जन्म में दुःख व परजन्म में पतन के कारण दुःखों से ग्रस्त होने का ज्ञान कराया जाता था। यह भी ज्ञातव्य है कि प्राचीन काल में लोगों की आवश्यकतायें बहुत कम थी। कृषि से जो अन्न, शाक सब्जियां, फल तथा पशुपालन से जो गोदुग्धादि पदार्थ उपलब्ध होते थे उसी से मनुष्य सन्तुष्ट रहते थे। **लोग अपना ध्यान भौतिक उन्नति में कम तथा आध्यात्मिक उन्नति में अधिक दिया करते थे।** वस्त्र व वेशभूषा भी बहुत साधारण होती थी। वेद और आयुर्वेद सहित विस्तृत वैदिक साहित्य के विद्वान अधिक होते थे जिससे रोग हो जाने पर आयुर्वेदिक उपचार मिल जाया करता था। यज्ञ से पर्यावरण की शुद्धि, सामान्य जीवन, शुद्ध गोदुग्ध, शुद्ध अन्न व अन्य भक्ष्य पदार्थों के सेवन से मनुष्य रोगी तो अपवाद स्वरूप ही होते थे। अतः इन सब कारणों से मनुष्यों का जीवन बहुत प्रसन्नता, सुख एवं सन्तुष्टि के साथ व्यतीत होता था। लोग वेद व शास्त्रों के अध्ययन तथा अपने कर्तव्यों वा धर्म के पालन में अधिक रूचि रखते थे। ऐसे ही समय में हमारे ऋषियों व विद्वानों ने श्रावणी पर्व का विधान किया था जिनका उल्लेख गृह्य सूत्रों में उपलब्ध होता है।

श्रावणी श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इस दिन सभी वेद प्रेमियों को कुछ समय वेदों का स्वाध्याय करना चाहिये। निकटवर्ती किसी स्थान पर जहां श्रावणी पर्व

मनाया जा रहा हो और वेद कथा, व्याख्यान एवं यज्ञ आदि हो रहा हो, तो उसमें सम्मिलित होना चाहिये। **समय निकालकर सत्यार्थप्रकाश के सातवें समुल्लास का पाठ करना चाहिये।** हमारे पास सत्यार्थप्रकाश का आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट का प्रचार संस्करण है। इसमें कुल 25 पृष्ठ हैं। इसे लगभग 2 या ढाई घंटे में पढ़ा जा सकता है। इससे ईश्वर, जीव व वेद विषयक अनेक नूतन बातों का ज्ञान होने सहित इन विषयों से संबंधित सभी शंकाओं का निवारण भी होगा। इस समुल्लास के स्वाध्याय से इसके पाठकों में वेद प्रचार करने की क्षमता का विकास भी होगा। अतः सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय को श्रावणी पर्व मनाने का आधुनिक तरीका कह सकते हैं। इस कार्य को संकल्पपूर्वक करना चाहिये। कुछ लोग इस दिन को रक्षा बन्धन के नाम से मनाते हैं। जहां जो लोग इस पर्व को मनाते हैं, वह इसे मना सकते हैं। इसे मनाने से भी परिवारों में सौहार्द उत्पन्न होता है। सभी वैदिक धर्मियों को इस दिन अपने निवास पर यज्ञ अवश्य करना चाहिये और अर्थाभाव वाले वैदिक गुरुकुलों को कुछ धनराशि दान भी देनी चाहिये। आर्य पर्व पद्धति में कहा गया है कि आर्य पुरुषों को उचित है कि श्रावणी पर्व के दिन बृहद् हवन और विधिपूर्वक उपाकर्म करके वेद और वैदिक ग्रन्थों के विशेष स्वाध्याय का उपाकर्म करें और उस को यथाशक्ति और यथावकाश नियमपूर्वक चलाते रहें। हम यहां शतपथ ब्राह्मण के 11/5/7/1 वचन का हिन्दी भावार्थ भी प्रस्तुत कर रहे हैं। इसमें स्वाध्याय की प्रशंसा करते हुए कहा गया है कि **स्वाध्याय करने वाला सुख की नींद सोता है, वह युक्तमना होता है, अपनी कायिक, मानसिक व इतर सभी समस्याओं का परम चिकित्सक होता है, स्वाध्याय से इन्द्रियों का संयम और एकाग्रता आती है और प्रज्ञा की अभिवृद्धि होने से विद्या की प्राप्ति होती है।** श्रावणी पर्व के दिन यज्ञ करने के साथ पुराने यज्ञोपवीत का त्याग करने व नये यज्ञोपवीत को धारण करने की भी परम्परा है। इसका भी निर्वहन किया जाना चाहिये। यज्ञोपवीत का अपना महत्व है। शिवाजी महाराज ने राज्याभिषेक के अवसर पर यज्ञोपवीत धारण करने के लिए करोड़ों रुपये व्यय किये थे। यज्ञोपवीत के तीन धागे गले में पड़ते ही पितृऋण, देवऋण तथा ऋषि ऋण से जुड़े कर्तव्यों की याद दिलाते हैं। जिस देश में श्रावणी पर्व पर यज्ञोपवीत बदलने व धारण करने की परम्परा होगी तथा जहां वेदों का स्वाध्याय किया जायेगा, वहां मनुष्य अपने तीन ऋणों को स्मरण कर कभी वेद विमुख, नास्तिक व मिथ्या मत–मतान्तरों में नहीं फंसेगा। अतः श्रावणी पर्व को स्वाध्याय, यज्ञ व यज्ञोपवीत परिवर्तन के साथ व वेदोपदेश आदि का श्रवण करने सहित सत्यार्थप्रकाश के सातवें समुल्लास के अध्ययन का व्रत लेकर मनाया जाना चाहिये।

श्रावणी पर्व के आठवें दिन कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया जाता है। **सुदर्शनचक्रधारी योगेश्वर कृष्ण वैदिक भारतीय संस्कृति के गौरव हैं।** कृष्ण जी का जन्म मथुरा नगरी में हुआ था। महाभारत युद्ध के वह प्रमुख नायक थे। पाण्डव कुल के युधिष्ठिर, अर्जुन आदि ने अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध कृष्णजी के नेतृत्व में महाभारत का युद्ध लड़ा था। इस युद्ध में अनेक अवसरों पर पाण्डवों के सम्मुख अनेक समस्यायें एवं संकट आये जिन सबका समाधान श्री कृष्ण जी ने अपनी प्रखर विवेक बुद्धि से किया। कृष्ण जी ईश्वर भक्त, वेदभक्त, योगी, युद्ध विद्या के मर्मज्ञ, अपराजेय योद्धा, सत्य के पुजारी, देशभक्त व देशरक्षक, अन्याय एवं अधर्म के विरोधी तथा वैदिक धर्म एवं संस्कृति के अनुयायी व रक्षक थे। कृष्णजी अस्त्र शस्त्र की शिक्षा प्राप्त करने पर क्षत्रिय समाज में सर्वश्रेष्ठ वीर समझे जाने लगे थे। उन्हें कभी कोई परास्त न कर सका। कंस, जरासंघ, शिशुपाल आदि तत्कालीन प्रधान योद्धाओं से तथा काशी, कलिंग, गांधार आदि राजाओं से वे लड़ गए और उन्होंने उन सब को पराजित किया था। महाभारत युद्ध में भीष्म

पितामह, गुरु द्रोणाचार्य एवं कर्ण आदि योद्धाओं ने पाण्डव पक्ष में भारी तबाही मचाई थी। जयद्रथ ने धर्म व युद्ध नियमों के विरुद्ध अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु का वध किया था। इन सबका कृष्ण जी ने अपनी बुद्धि–चातुर्य से समाधान किया था। श्री कृष्ण जी ने अर्जुन के द्वारा रणभूमि में कौरवपक्ष के प्रमुख योद्धाओं को धराशायी किया था अन्यथा महाभारत युद्ध का परिणाम धर्म में स्थित पाण्डवों के पक्ष में नहीं हो सकता था। **महाभारत युद्ध में पाण्डवों की विजय का यदि किसी एक पुरुष को श्रेय देना हो तो वह योगेश्वर कृष्ण ही हैं।** सात्यकि और अभिमन्यु उनके शिष्य थे। यह दोनों भी किसी शत्रु से सहजता से हारने वाले नहीं थे। अर्जुन ने भी युद्ध की अनेक गहन बातों का अध्ययन कृष्ण जी से ही किया था।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में श्री कृष्ण जी की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत (प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थ) में अत्युत्तम है। **उनके गुण कर्म–स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश हैं। महाभारत में श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण–पर्यन्त अधर्म का कोई बुरा कुछ भी आचरण किया हो ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने (उन पर) मनमाने अनुचित दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी लगाई और कुब्जा दासी से समागम, पर–स्त्रियों से रास मंडल कीड़ा आदि मिथ्या दोष श्री कृष्ण जी में लगाए हैं।** इसको पढ़–पढ़ा व सुन–सुना के अन्यमत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत–सी निन्दा करते हैं। **जो यह भागवत (पुराण) न होता तो श्री कृष्ण जी के सद्श महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती?** महर्षि दयानन्द के इन शब्दों के अनुसार भागवत पुराण के रचयिता ने कृष्ण जी के उज्जवल चरित्र का हनन किया है। आश्चर्य है कि हमारे कुछ सनातनी बन्धु उसी को महत्व देते हैं। बंकिंग चन्द्र चट्टोपाध्याय ने भी कृष्णजी के उज्जवल चरित्र एवं व्यक्तित्व के विषय में लिखा है। उनके अनुसार **'श्री कृष्ण आदर्श मनुष्य थे। मनुष्य का आदर्श प्रचारित करने के लिए उनका प्रादुर्भाव हुआ था। वे अपराजेय, अपराजित, विशुद्ध, पुण्यमय, प्रेममय, दयामय, दृढ़कर्मी, धर्मात्मा, वेदज्ञ, नीतिज्ञ, धर्मज्ञ, लोकहितैशी, न्यायशील, क्षमाशील, निर्भय, अहंकारशून्य, योगी और तपस्वी थे। वे मानुषी भाक्ति से काम करते थे परन्तु उन में देवत्व अधिक था। पाठक अपनी बुद्धि के अनुसार ही इस का निर्णय कर लें कि जिस की शक्ति मानुषी पर चरित्र मनुष्यातीत था, वह पुरुष मनुष्य या देव था।'** श्री कृष्ण जी न केवल भारत अपितु विश्व के अद्वितीय गौरवमय महापुरुष थे। उन्होंने युद्ध भूमि में अर्जुन का विषाद दूर किया था और उसे अपने क्षत्रियायेचित कर्तव्य पर आरूढ़ किया था। इसका परिणाम यह हुआ कि महाभारत के युद्ध में कौरवों का असत्य पक्ष पराजित हुआ और पाण्डवों के सत्यपक्ष की विजय हुई। गीता के नाम से प्रचलित कृष्ण उपदेश में बहुत सी अच्छी बातें हैं, उन्हें भी पढ़ना चाहिए। आर्यसमाज के अनेक शीर्ष विद्यानों ने महाभारत के आधार पर श्री कृष्ण जी के जीवन चरित लिखे हैं। इनमें पं. चमूपति, लाला लाजपतराय, डॉ. भवानीलाल भारतीय आदि के जीवन चरित महत्वपूर्ण हैं जिन्हें सबको पढ़ना चाहिये। पं. सन्तराम रचित शुद्ध महाभारत भी पढ़ने योग्य ग्रन्थ है। सम्भवतः अब यह अनुपलब्ध है। स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी ने भी एक विशालकाय शुद्ध ग्रन्थ महाभारत का सम्पादन किया था जो आर्य प्रकाश **'विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली'** से उपलब्ध होता है। यह सभी ग्रन्थ पठनीय हैं। इन ग्रन्थों की शिक्षा से देश की युवा पीढ़ी के ज्ञान में वृद्धि सहित उनके चरित्र निर्माण में सहायता मिलेगी और वैदिक धर्म की भी रक्षा हो सकेगी।

वैदिक संस्कारों से युक्त शिक्षा का केन्द्र तपोवन विद्या निकेतन

–मनमोहन कुमार आर्य'

वैदिक साधन आश्रम तपावेन, देहरादून के अनेक कार्यों में से एक महत्वपूर्ण कार्य एक आर्य शिक्षण संस्था **'तपोवन विद्या निकेतन'** का संचालन है। यह संस्था 35 वर्ष पूर्व सन् 1983 में स्थापित की गई थी जिसके पहले प्रबन्धक श्री देवेन्द्र रहनुवाल थे। अब श्री रहनुवाल दिवंगत हो गये हैं। हमारा सौभाग्य है कि सन् 1968 से 1970 तक जब हम श्री गुरुनानक बालक इंटर कालेज, देहरादून में पढ़ते थे तो श्री रेहनुवाल जी हमारे अंग्रेजी के अध्यापक थे। आप का पढ़ाने का ढंग बहुत प्रभावशाली था। आप विषय तो पढ़ाते ही थे साथ में बच्चों को आर्य हिन्दू पूर्वजों के इतिहास की गौरवपूर्ण बातें भी बताते थे। विषयान्तर होकर नई–नई बातों को जानना हमें अच्छा लगता था। वहां से आप देहरादून के डी.ए.वी. स्नात्कोत्तर महाविद्यालय में नियुक्त हो गये थे। डा. वेदप्रकाश गुप्त देहरादून में आर्यसमाज के प्रमुख व्यक्तियों में से हैं। उन्होंने देहरादून में 'मानव कल्याण केन्द्र' एवं 'द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल' की स्थापना की है। दोनो संस्थायें अच्छा कार्य कर रही हैं। समाज सेवा में अग्रणीय श्री देवेन्द्र रेहनुवाल, श्री गुरुनारायण दुबे और श्री चमनलाल रामपाल आर्य उनके निकट सहयोगी थे। अपने स्थापना काल से 'तपोवन विद्या निकेतन' निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। श्रीमती उषा नेगी जी इस विद्यालय की प्राचार्या हैं जिनका निर्धन बच्चों को शिक्षित करने का स्वभाव, रूचि व पैसेन है। हमें लगता है कि विद्यालय की उन्नति के अनेक कारणों में मुख्य कारण प्रधानाचार्य महोदया जी का शिक्षा के प्रति भावनात्मक लगाव वा योगदान है। अन्य सभी शिक्षिकायें एवं विद्यालय के मैनेजर आदि भी समर्पित भाव से कार्य कर रहे हैं। विद्यालय को सरकारी सहायता नहीं मिलती है अतः हम अनुमान लगा सकते हैं कि कम वेतन में ही सब लोग कार्य कर रहे हैं। बच्चों में जो योग्यता व संस्कार उत्पन्न किये जा रहे हैं वह किसी सरकारी व निजी स्कूल से कहीं अधिक प्रशंसनीय व सराहनीय है। यह भी बता दें कि हमारे इस स्कूल में नर्सरी, एल.के.जी, यू.के.जी. सहित कक्षा 1 से कक्षा 8 अर्थात् जूनियर हाई स्कूल तक की शिक्षा दी जाती है। स्कूल में बालक बालिकायें दोनों साथ–साथ पढ़ते हैं।

'तपोवन विद्या निकेतन, नालापानी, देहरादून' वैदिक साधन आश्रम के साथ सटा हुआ है। विद्यालय का अपना दो मंजिला भवन है, खुला प्रांगण भी है। विद्यालय के द्वार के सामने से लोकल बसें चलती हैं। विद्यालय और तपोवन आश्रम नालापानी ग्राम में खलंगा रोड पर हैं। यहां से कुछ किमी. की दूरी पर ही खलंगा में एक स्मृति स्तम्भ है। बताते हैं कि यहां पर देश की आजादी से पूर्व नेपाल और अंग्रेज सेनाओं के बीच बन्दूकों एवं तोपों से युद्ध हुआ था। इस युद्ध के अवशेष अब भी वहां विद्यमान है। कुछ लोग वन–विहार अर्थात् पिकनिक की दृष्टि से भी उस स्थान पर जाते हैं। यदि खलंगा जाना हो तो अपने दो पहिया या चार पहिया वाहन का ही प्रयोग करना पड़ता है। खलंगा जाने के लिए अभी सरकारी बस सेवा नहीं है। विद्यालय में वर्तमान में कुल 397 बच्चे अध्ययनरत हैं। सबसे अधिक बच्चे कक्षा 7 व 8 में हैं। इन दोनों कक्षाओं में 38–38 बच्चे हैं। कक्षा 5 व 6 में 36–36 बच्चे हैं। आश्रम के पदेन प्रधान ही विद्यालय के भी प्रधान होते हैं। आर्यजगत के विख्यात ऋषिभक्त,

यज्ञ प्रेमी, दैनिक यज्ञ करने वाले, मुक्त हस्त से आर्य संस्थाओं को दान देने वाले तथा आर्य विद्वानों को प्रति वर्ष अनेक पुरुस्कार देने वाले यशस्वी श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री वर्तमान समय में आश्रम व विद्यालय के प्रधान हैं। प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थियों को वार्षिक परीक्षा में प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने पर क्रमश 125, 100 तथा 75 रूपये की मासिक छात्रवृत्ति प्रधान जी द्वारा प्रदान की जाती है। सभी बच्चों को वर्ष के पूरे बारह महीने की छात्रवृत्ति दी जाती है। इन छात्रवृत्तियों को आश्रम के ग्रीष्मोत्सव में पधारे सभी ऋषि भक्तों के सामने दिया जाता है। आश्रम में जो ऋषि भक्त आते हैं उनमें कुछ बच्चों की प्रतिभाओं को देखकर बच्चों को अपनी ओर से भी छात्रवृत्तियां देते हैं। आर्यसमाज के विद्वान वक्ता एवं प्रचारक श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, आगरा भी मेधावी बच्चों को 5,000/– वार्षिक छात्रवृत्ति देते हैं। शेमरॉक रेनबो स्कूल इन्दिरा नगर के संचालक श्री सुनील अग्रवाल जी द्वारा आश्रम विद्यालय के सभी 400/– बच्चों के लिए स्वेटर्स दान स्वरूप प्रदान किये जा रहे हैं। आश्रम की मैनेजमेंट कमेटी की ओर से सभी अध्यापिकाओं को वर्ष में एक बार ड्रेस एलाउन्स के रूप में दो हजार रुपये दिये जाते हैं।

आश्रम के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी से हमने संस्था का उद्देश्य पूछा। उन्होंने बताया कि **'बालक बालिकाओं को युग की आवश्यकता के अनुसार शिक्षित करते हुए उनमें प्राचीन वैदिक संस्कृति के प्रति अनुराग पैदा करना है।'** यह उद्देश्य को हम विद्यालय में पूरा होते हुए देख रहे हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हमें आश्रम के शरदुत्सव में बच्चों के वार्षिक उत्सव की प्रस्तुतियों को देखकर मिलता है। आश्रम के अक्टूबर मास में होने वाले प्रत्येक शरदुत्सव में तपोवन विद्या निकेतन का स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया जाता है। अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में यहां आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी के नेतृत्व में युवा सम्मेलन होता है, महिला सम्मेलन का आयोजन भी किया जाता है, संगीत सम्मेलन होता है, वेद पारायण यज्ञ होता है व अन्य अनेक प्रभावशाली कार्यक्रम होते हैं परन्तु विद्यालय का स्थापना दिवस उत्सव बहुत आकर्षक एवं प्रभावशाली होता है। बच्चों से आर्यसमाज के इतिहास, नियम, सिद्धान्तों व ऋषि दयानन्द के जीवन से जुड़े प्रश्न किये जाते हैं जिनका सभी बच्चे सही सही उत्तर देते हैं। आर्य महापुरुषों के जीवन पर संक्षिप्त नाटिकायें तैयार कर विद्यालय के बच्चों द्वारा प्रस्तुत की जाती हैं। यही सभी आयोजन यहां देश भर से आये हुए ऋषिभक्तों द्वारा सराहे जाते हैं और उनके द्वारा सहर्ष बच्चों को पारितोषिक राशि सहित विद्यालय को भी दान दिया जाता है। यह भी बता दें कि आश्रम के इस विद्यालय में अधिकांश निर्धन वर्ग के बच्चे ही शिक्षा प्राप्त करते हैं। बच्चों के अभिभावकों का आश्रम व इसके विद्यालय में पूर्ण विश्वास है और सभी आशावान् हैं कि उनके बच्चे यहां पढ़कर देश के योग्य नागरिक बनेंगे।

आश्रम के मंत्रीजी ने हमें बताया कि विद्यालय में हिन्दी व अंग्रेजी दोनों माध्यमों से शिक्षा दी जाती है। कक्षा 5 से 8 तक के बच्चों को आश्रम के पुरोहित व धर्माचार्य पं. सूरत राम जी धर्म शिक्षा का अध्ययन कराते हैं। इस धर्म शिक्षा की कक्षानुसार पुस्तकें आर्य प्रकाशक **'विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली'** से मंगाई जाती हैं और उनके अनुसार ही बच्चों को वह सब कुछ स्मरण कराया जाता है। विद्यालय में सप्ताह में दो दिन पं. सूरत राम जी प्रातः वैदिक पद्धति से अग्निहोत्र–यज्ञ कराते हैं। सप्ताह में एक बार शनिवार को बच्चे आश्रम की यज्ञशाला में भी सामूहिक यज्ञ करते हैं। आश्रम में अपना एक चिकित्सालय भी चल रहा है। इस चिकित्सालय में होम्योपैथी तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति से उपचार की सुविधायें उपलब्ध हैं। दंत चिकित्सा एवं फिजियोथिरैपी के

चिकित्सक की सेवायें भी आश्रम के चिकित्सालय में उपलब्ध हैं। सभी पैथियों की औषधियां भी यहां उपलब्ध हैं। वर्तमान में एक एलोपैथी के काय चिकित्सक वा फिजीशियन की सेवायें प्राप्त करने के लिए प्रयत्न किये जा रहे हैं। आशा है कि कुछ समय बाद इनकी सेवायें भी उपलब्ध हो जायेंगी। नेत्र चिकित्सा के लिए भी देहरादून के एक प्रसिद्ध चिकित्सक एवं नेत्र सर्जन से सम्पर्क किया गया है। उनकी सेवायें मिलने की भी सम्भावना है। इन सब सुविधाओं का लाभ विद्यालय के बच्चों व उनके परिवारों को दिलाने के लिए एक योजना आरम्भ की गई है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक बच्चे के परिवार का चिकित्सा कार्ड बनाया गया है। बच्चों को इस सुविधा के लिए पचास रुपया मासिक देना होगा। इस योजनानुसार विद्यार्थी व उसके परिवार के सभी सदस्यों को आश्रम के चिकित्सकों द्वारा निःशुल्क चिकित्सा परामर्श दिया जायेगा। वर्तमान आश्रम के चिकित्सालय में आयुर्वेद के चिकित्सक के रूप में श्री विनोद प्रकाश भट्ट, होम्योपैथी चिकित्सक श्रीमती सुषमा राणा, दंत चिकित्सक सुश्री रेखा बहुगुणा तथा फिजीयोथिरैपी चिकित्सक श्रीमती मीना राणा तथा श्री हुकम सिंह आश्रम को अपनी सेवायें दे रहे हैं। निकटवर्ती नालापानी ग्राम व आस पास के लोग चिकित्सा हेतु इन चिकित्सकों का लाभ उठा रहे हैं।

आश्रम के विद्यालय में वैदिक सिद्धान्तों का पालन किया जाता है। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती उषा नेगी जी सहित सभी अध्यापिकाओं का पूर्ण सहयोग आश्रम के आयोजनों में भी प्राप्त होता है। बच्चे सभी कार्यक्रमों में सम्मिलित होते हैं और अपनी प्रभावशाली प्रस्तुतियां देते हैं। जो बन्धु विद्यालय के विषय में अधिक जानना चाहें वह स्कूल के फोन न. 09412051790 पर फोन करके जानकारी ले सकते हैं।

यह भी बता दें स्कूल की लोकप्रियता दिनोदिन बढ़ रही हैं। बच्चों की संख्या में वृद्धि से भवन छोटा पड़ रहा है। अतः आवश्यकताओं के अनुरूप सुविधाओं का विस्तार करना अपेक्षित है। विद्यालय की प्रबन्ध समिति का विद्यालय के साथ 30 गुणा 25 फीट आकार का दो मंजिला भवन बनाने का विचार है। बालिकाओं, बालक तथा अध्यापिकाओं के लिए चार शौचालयों का निर्माण भी किया जाना है। अनुमानतः इस कार्य में 20 लाख रुपये व्यय होने का अनुमन है। यह आश्रम आर्यजगत के सच्चे विद्वान व ऋषि भक्त अनुयायियों व सेवकों का अपना आश्रम है। आश्रम इन कार्यों को सम्पन्न करने के लिए दानी महानुभावों से प्रार्थना करता है कि वह अविद्या के नाश व ज्ञान की वृद्धि के इस प्रयास में आश्रम को मुक्त हस्त से दान दें। आश्रम सभी दानी महानुभावों को विश्वास दिलाता है कि उनके दान के धन का सदुपयोग किया जायेगा। दानी महानुभाव पुण्य के भागी होंगे। इसके लिए आप आगे आयें, आश्रम आपसे अनुरोध करता है।

आश्रम का आगामी पांच दिवसीय शरदुत्सव 3 अक्टूबर से 7 अक्टूबर, 2018 तक होगा। इस अवसर पर वेदपारायण यज्ञ और प्रख्यात विद्वान पं. उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ, आगरा सहित अनेक विद्वानों के प्रवचन सुनने को मिलेंगे। अनेक भजनोपदेशकों के भजन व मौलिक विचार भी आप सुनेंगे। युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, संगीत सम्मेलन सहित **'तपोवन विद्या निकेतन'** का वार्षिकोत्सव भी होगा जिसमें बच्चों की रंगारंग प्रस्तुतियों सहित बच्चे अपनी प्रतिभा व आर्यसमाज के नियम व सिद्धान्तों पर तैयार कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। आश्रम की कार्यकारिणी सभी आर्य बन्धुओं को इस उत्सव में सम्मिलित होने का आमंत्रण देता है। आप उत्सव में सम्मिलित होकर लाभ उठायें।

लक्ष्मी की खोज में

–वीतराग महात्मा प्रभुआश्रित जी महाराज

लक्ष्मी–पूजन
नारायण गुफा में

माथे और पांव पर–काले धब्बे क्यों?

(1) दीवाली की रात को हिन्दू लोग द्वार खुले रखते हैं–और रात भर दीपक लैम्प जलाकर प्रकाश किए रखते हैं–इस विचार से कि लक्ष्मी प्रवेश करेगी और इसीलिए लक्ष्मी–पूजन करते हैं। उनकी धारणा है कि जिस गृह में प्रकाश नहीं होता–या द्वार खुला नहीं होता, वहाँ लक्ष्मी नहीं आती। इसका वास्तविक स्वरूप हिन्दू जाति भूल गई। अभिप्राय यह था कि लक्ष्मी स्त्री है। विष्णु–नारायण की वह पतिव्रता नारी की भान्ति, अपने पति की खोज में सतत घूमती रहती है और भगवान् हृदय की गुफा में घुसा हुआ है–वही पाता है या लक्ष्मी उसी के पास जाती है, जिसके हृदय–कपाट खुले हुए हैं, और जिस हृदय मन्दिर या घर में प्रकाश या उजाला है।

यह प्राप्त होती है दो प्रकारों सेः–

(अ) प्रभु भक्ति से हृदय में प्रकाश–क्योंकि विष्णु यज्ञ स्वरूप हैं और यज्ञ प्रकाशमान होता है।

(ब) प्रभु की प्रजा–जनता जनार्दन की सेवा से हृदय में उदारता (कपाट खुलना) आती है। जिनमें ये दो गुण हैं, वहां लक्ष्मी रहना चाहती है।

(2) उदाहरण आलंकारिक है–कि लक्ष्मी के माथे पर भी काला चिह्न है–और पैरों में भी। लक्ष्मी कहती है कि मैं पतिव्रता नारी हूँ–अपने पति की खोज में निकलती हूँ तो मैं देखती हूँ कि सन्त जनों ने मेरे पति को अपने हृदय स्थान की गुफा में छिपाया हुआ है, मैं उनके पास जाती हूँ कि उनके हृदय में प्रविष्ट हो जाऊँ, उनके चरणों में लगती हूँ–तो वे लात मेरे मस्तक पर मार देते हैं–मुझे अन्दर हृदय में आने नहीं देते। इसलिए मेरा मस्तक उनकी लात से काला पड़ गया है और सांसारिक लोग पांव पड़ते हैं–मेरा पति बनना चाहते हैं–मैं अपने पवित्रव्रत धर्म की रक्षा के लिए लात लगाती हूँ। उनके पास–लिप्त काले विचार, मस्तक से लगने से मेरा पांव काला हो गया है।

अपनी सुध बुध
नाना प्रकार की विचित्र लीलाओं का भान तत्व को जानकर लीलाधर में मग्न हो जा

पशु और मनुष्य की मानवी और पाशवी ज्ञानेन्द्रियों का अन्तर

पशु और मनुष्य की आंख, कान, नाक, जिह्वा आदि ज्ञानेन्द्रियां बराबर हैं–पर भेद बड़ा है। पशु जिह्वा से एक ही वाणी बोल सकता है, और एक ही स्वाद ले सकता है, कान से एक ही अपने काम की ध्वनि सुन सकता है, सब प्रकार की नहीं। नाक से अपने मतलब की गंध सूंघ सकता है–अन्य नहीं। आंख से अपने भोग का रूप पहचान सकता है–शेष नहीं। पर मानव जिह्वा से नाना प्रकार के रस आस्वादन करता है, अनेक प्रकार की भाषाएं बोल सकता है। कान से अनेक प्रकार के शब्द सुन सकता है। आंख से अनेक रूप देख सकता है और नाक से हर प्रकार की सुगन्ध–दुर्गन्ध सूंघ सकता है–यह भेद क्यों?

परमात्मा की अपार कृपा का पात्र मनुष्य है। प्रभु का आशय यह है कि मेरा पुत्र इन नाना प्रकारों में–मेरी विचित्र लीला का भान करे, समझे, और तत्व को जानकर इस सब विलक्षणता में, आश्चर्य में आकर अपनी सुधि भी भूल जावे, और मेरे में तन्मय हो जावे। फिर जो मनुष्य, जन्म मानव का पाकर, ऐसा नहीं कर पाता–वह बड़ा ही मन्द भाग्य होगा। सब स्वाद पाकर, पशु की भांति उनको एक ही प्रकार का कर लेता है।

पांच विभूतियां
विनीत स्वभाव
एक कसौटी

प्रभु की विभूतियां अनेक हैं–पर मुख्य पांच हैं, और इन सबकी कसौटी एक ही है–

1 2 3 4 5

विभूतियां–ज्ञान, ध्यान, दान, ईमान, प्राण

कसौटी–है एक–विनय (नम्रता)! कोई भी विभूति सफल नहीं (खरी नहीं) यदि एक विनय नहीं। ऐसे अविनीत स्वभाव वाले मनुष्य का ज्ञान भी कोरा, ध्यान भी छोरा (अनाथ), दान भी खोटा, ईमान भी छोटा, प्राण भी टोटा।

विनय (नम्रता) में ही प्रभु का रंग है।

विनय– परमात्मा को जानने के लिए विद्या की आवश्यकता है। या परमात्मा के जानने का नाम ही विद्या है। विद्या की परख है विनय। "विद्या ददाति विनयम्"। जिस विद्या से विनय उत्पन्न नहीं हुई–वह विद्या–विद्या नहीं और इसको जानने वाला न विद्वान् हैं न भक्त है।

(2) प्रभु की भक्ति, बिना विनीत स्वभाव के नहीं हो सकती।

(3) बिना विनीत स्वभाव के गुरु से ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती।

(4) और बिना विनय के किया हुआ कर्म–जीवित कर्म नहीं रह सकता।

(5) जिसमें विनीत भाव होगा–उसने पत्थर को मोम कर दिया, और भड़कती अग्नि को बुझा दिया। जैसे काष्ठ (लकड़ी) सूखा हुआ–जिसमें नम्र होने का, झुकने का स्वभाव नहीं, उसे ही अग्नि जला भस्मीभूत कर देती है। जमीन (मिट्टी) खाकर खोखला कर देती है। पर गीली लकड़ी जिसमें झुकने का स्वभाव है–उसे अग्नि शीघ्र नहीं जला सकती–न भस्मसात् कर सकती है।

पानी (जल) जिसका स्वभाव ही–समयानुसार नीचे और ऊपर होना है अर्थात् जब कोई ऊंचाई सामने आ जावे–तो धीरे–धीरे एकत्र होकर इतना बढ़ जाता है कि आसानी से उसके ऊपर रौंदता हुआ लांघ जाता है, और उसे अपने नीचे कर लेता है और जब कोई गड्ढा आ जावे तो स्वयं नीचे चला जा कर उसे भर देता है, और जब पर्वत बाधा दे तो अत्यन्त ही विनीत होकर इतना नीचे चला जाता है कि वह अपना मार्ग आप निकाल कर पर्वत को चीरकर बाहर आ जाता है। आग उसे जला नहीं सकती–अपितु पानी ही उसे बुझा देता है, उसकी सत्ता मिटा देता है, और भूमि पर आरूढ़ रहता है, और नीचे भी उसका सहारा बना रहता है। वायु को अपने संग से शीतल कर देता है। ग्रीष्म ऋतु में लोग जल के संग के कारण वायु की शीतलता की प्रशंसा करते हैं। पृथ्वी और पृथ्वी की उपजाऊँ की शोभा जल के नम्र भाव से है।

विनायक दामोदर 'वीर' सावरकर

—स्वामी यतीश्वरानन्द जी

"मातृभूमि! तेरे चरणों में पहले ही मैं अपना मन अर्पित कर चूका हूँ। देश–सेवा ही ईश्वर सेवा है, यह मानकर मैंने तेरी सेवा के माध्यम से भगवान की सेवा की।" **—वीर सावरकर**

स्वा.विनायक दामोदर सावरकर

24 दिसम्बर 1910 को एक भारतीय क्रान्तिकारी को ब्रिटिश राजसत्ता से द्रोह के आरोप में कुल पचास वर्ष आजीवन निर्वासन व कठोर कारावास की सजा हुई। भारतीय क्रान्तिकारियों के इतिहास में यह सबसे लम्बी सजा है। इस सजा को पाने वाले विनायक दामोदर सावरकर अग्रिम पंक्ति के क्रान्तिकारी, प्रखर राष्ट्रवादी, चिन्तक, सिद्धहस्त लेखक, कवि, ओजस्वी वक्ता, दूरदर्शी राजनेता एवं इतिहासकार थे। आजादी के बाद सरकार–समर्थित इतिहासकारों ने इनकी छवि व स्मृति को मलिन करने के प्रयास किये, सरकार ने कई बार इन्हें सलाखों के पीछे भेजने के कुत्सित षडयन्त्र रचे, और उनकी बहुमुखी प्रतिभा व समाज सेवा के कार्यों को जानबूझकर महत्व नहीं दिया गया क्योंकि इन्होंने हिन्दू राष्ट्र की राजनीतिक विचारधारा को विकसित करने का काम किया था।

28 मई 1883 को नासिक जिले के भागुर गाँव में दामोदर पन्त तथा राधाबाई के दूसरे पुत्र के रूप में जम्मे विनायक बचपन से ही तीक्ष्ण बुद्धि थे। जब ये नौ वर्ष के थे तो हैजे की महामारी में माता की मृत्यु हो गई और फिर 1898 की प्लेग महामारी में पिता भी स्वर्गवासी हो गये। 1898 में ही पन्द्रह वर्ष की अवस्था में विनायक ने अष्टभुजा–देवी की मूर्ति के सामने सशस्त्र संघर्ष द्वारा राष्ट्र को स्वाधीन कराने का संकल्प लिया। बड़े भाई गणेश (बाबूराव) ने परिवार की जिम्मेदारी संभाली तथा विनायक में राष्ट्रप्रेम के सूत्र को मजबूती दी। बाबूराव ने विनायक को उच्च शिक्षा दिलवाने के लिए कठोर मेहनत की। जनवरी 1900 में विनायक ने 'मित्र–मेला' नामक गुप्त क्रान्तिकारी सभाएँ करना शुरू कर दिया। 01 मार्च 1901 को इनका विवाह रामचन्द्र चिप्लंकर की पुत्री यमुनाबाई से कर दिया गया। 19 दिसम्बर 1901 को इन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की तथा ससुर से कुछ आर्थिक मदद के सहारे 24 जनवरी 1902 में पूना के फर्गुसन कॉलेज में दाखिला ले लिया। मई 1904 में विनायक ने 'अभिनव भारत' नामक क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना की। इसके लिए उन्होंने इटली के क्रान्तिकारी 'मैजिनी' से प्रेरणा ली थी। नवम्बर 1905 में बंग–भंग आन्दोलन के समय इन्होंने पूना में विदेशी कपड़ों की पहली 'होली' का आयोजन किया और अगले महीने बी.ए. की परीक्षा पास कर ली, हालांकि उन्हें कॉलेज से निकाल दिया गया था। जून 1906 में श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा स्थापित 'शिवाजी छात्रवृत्ति' पर सावरकर लंदन रवाना

हुए तथा वहाँ पहुँचते ही उनके लेख इण्डियन सोशियोलॉजिस्ट, तलवार तथा युगान्तर जैसे क्रान्तिकारी पत्रों में छपने लगे। वकालत की पढ़ाई करते हुए 10 मई 1907 को इन्होंने लंदन में 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम की जयन्ती मनाई। जून 1907 में इन्होंने इटली के क्रान्तिकारी पर 'जोसेफ मैजिनी' नामक पुस्तक लिखी। 1908 में इन्होंने 'भारत का स्वाधीनता युद्ध 1857' नामक पुस्तक लिखी। यह पुस्तक ब्रिटिश दबाव के कारण लंदन, पेरिस व बर्लिन में नहीं छप सकी। तब इसे हॉलैण्ड से प्रकाशित कराया गया तथा इनकी कॉपियाँ चोरी –छिपे पेरिस लाई गई जहाँ से चोरी–छिपे ही यह क्रान्तिकारी साहित्य इंग्लैण्ड व भारत भेजा गया, क्योंकि छपते ही इसे प्रतिबन्धित कर दिया गया था। मई 1909 में इन्होंने बार–एट–लॉ की परीक्षा पास की परन्तु सरकार ने इन्हें डिग्री देने से इंकार कर दिया क्योंकि ये क्रान्तिकारी गतिविधियों में लिप्त थे। तब सावरकर 'फ्री–इण्डिया सोसायटी' के संस्थापक अध्यक्ष भी थे।

01 जुलाई 1909 को मदनलाल धींगड़ा ने सीक्रेट सर्विस के शीर्ष अधिकारी कर्जन वाइली की हत्या कर दी तो ब्रिटिश सरकार ने जल्दी ही इण्डिया हाउस से इस हत्या के तार जोड़ लिये। तब सावरकर 'इण्डिया हाउस' चलाते थे। सावरकर ने तब 'लंदन टाइम्स' में धींगड़ा के साहस की प्रशंसा में लेख लिखा। फिर 24 अक्टूबर 1909 को गाँधी की अध्यक्षता में इन्होंने 'इण्डिया हाउस' में विजयदशमी का आयोजन किया। तब तक सरकार कीर्तिनगर नामक एक दंत–चिकित्सा के छात्र को 'इण्डिया हाउस' में जासूस बना चुकी थी, जो प्रतिदिन स्कॉटलैण्ड यार्ड पुलिस को सूचनायें भेजता था। फिर भारत में नासिक के कलेक्टर जैक्सन की हत्या गणेश सावरकर के संगठन ने कर दी और सरकार ने विनायक सावरकर के विरूद्ध भी सबूत जुटाने शुरू कर दिये। चतुर्भुज अमीन नामक 'इण्डिया हाउस' रसोइये ने कर्जन वाइली–मर्डर केस में प्रयुक्त ब्राउनिंग पिस्तौल की सप्लाई में सावरकर का नाम लिया। तब तक सावरकर गिरफ्तारी से बचने के लिए मैडम भीखाजी कामा के पेरिस स्थित निवास पर चले गये थे। 13 मार्च 1910 को पेरिस से लंदन आते ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इन्हें 'एस. एस. मोरीय' नामक जहाज द्वारा भारत के लिए रवाना किया गया। 08 जुलाई 1910 को जैसे ही जहाज फ्रांस के मर्साय शहर के बंदरगाह के पास पहुँचा। सावरकर जहाज के सीवर हॉल से निकलकर पानी में कूदकर भाग निकले व तैरते हुए तट पर पहुँचे। पर इन्हें लेने आने वाली कार देरी से पहुँची और तब तक पुलिस ने इन्हें पुनः गिरफ्तार कर लिया। फ्रांस की सरकार ने इस तरह ब्रिटिश पुलिस द्वारा अपनी भूमि पर सावरकर की गिरफ्तारी पर आपत्ति जताई तथा मुकदमा अन्तर्राष्ट्रीय अदालत में पहुँचा जहाँ ब्रिटेन के पक्ष में फैसला हुआ। इससे पहले ब्रिटिश अदालत ने इन्हें 24 दिसम्बर 1910 को आजीवन निर्वासन की सजा सुनाई। 31 जनवरी को इन्हें पुनः आजीवन निर्वासन व कठोर कारावास की सजा सुनाई गई और इनका कारावास 23 दिसम्बर 1960 तक के लिए माना गया। इन्हें बम्बई लाकर पूना की येरावदा जेल भेज दिया गया जहाँ से इन्हें कालेपानी की सजा देकर अण्डमान की सेलुलर जेल भेज दिया गया। सेलुलर जेल में बलात् मजदूरी करते हुए इनकी अपने भाई से भेंट हुई। ब्रिटिश भारत की इस क्रूरतम जेल में कैदियों को भयंकर यातनाएं दी जाती थी। यहाँ कैदी कोल्हू में बैल की तरह जोते जाते थे, उनसे दलदली भूमि व पहाड़ी क्षेत्र को समतल कराया जाता था, बेंत व कोडों से

पीटा जाता था व भरपेट भोजन भी नहीं दिया जाता था। प्रत्येक कैदी को जेल में प्रतिवर्ष एक पत्र लिखने व प्राप्त करने की अनुमति थी और कलम व कागज के इस्तेमाल की मनाही थी। तब भी सावरकर ने अपने साथी कैदियों को लिखना–पढ़ना सिखाया तथा स्वयं कंकड़ों से अपनी कोठरी की दीवारों पर लेख लिखते रहे। 1920 में गाँधी, तिलक, विट्ठभाई पटेल तथा कई क्रान्तिकारियों ने सरकार से सावरकर की रिहाई की माँग दोहराई। सरकार ने सावरकर से ब्रिटिश कानून के सम्मान व हिंसा के त्याग के सम्बन्ध में कलमबंद बयान लिये व 2 मई 1921 को सावरकर भाइयों को रत्नागिरी जेल लाया गया। सावरकर के लिए यह एक रणनीति का हिस्सा था क्योंकि जेल से बाहर आकर वे मातृभूमि की बेहतर सेवा कर सकते थे। अन्ततः उन्हें 06 जनवरी 1924 को इस शर्त पर रिहा किया गया कि वे अगले पांच वर्ष तक रत्नागिरी जिले से बाहर नहीं जायेंगे और किसी राजनीतिक गतिविधि में हिस्सा नहीं लेंगे। वस्तुतः ये शर्त 1937 तक लागू रही।

07 जनवरी 1925 में इनकी पुत्री 'प्रभात' का जन्म हुआ। इसके तीन दिन बाद 10 जनवरी 1925 को आर्यसमाज के महान् शिक्षाविद् स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृति में इन्होंने 'श्रद्धानन्द' नामक साप्ताहिक का प्रकाशन शुरू किया। तब तक सावरकर वैचारिक स्तर पर हिन्दू सांस्कृतिक एवं राजनीतिक राष्ट्रवाद की ओर मुड़ चुके थे। रत्नागिरी जेल में इन्होंने 'हिन्दुत्वः हिन्दू कौन है?' नामक पुस्तक लिखी जो इनके उपनाम 'महरट्टा' से इनके समर्थकों ने छापी। इन्होंने हिन्दू को 'भारतवर्ष का देशभक्त निवासी' कहा तथा हिन्दू, बौद्ध,जैन, सिक्ख, समुदायों को अपनी परिभाषा में गिना। सावरकर ने अखण्ड भारत तथा बृहत भारत की संकल्पना दी तथा अपनी हिन्दूत्व की परिभाषा से मुसलमानों व ईसाइयों को अलग माना क्योंकि उनकी धार्मिक श्रद्धा उन्हें क्रमशः मक्का तथा येरुशलम से जोड़ती है। वस्तुतः उन्होंने मुस्लिम अलगाववाद की मुखर स्वर में आलोचना की और साफ कहा कि बहुत से मुसलमानों की राष्ट्रभक्ति संदिग्ध है। इन्होंने रत्नागिरी हिन्दू सभा की स्थापना की तथा जल्दी ही मार्च 1925 में डॉ० हेडगेवार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना को लेकर इनसे चर्चा करने पहुँचे।

साथ ही सावरकर हिन्दू समाज में जातिवाद की कुरीति के प्रति भी जागरूक थे। जब 10 मार्च 1927 को गाँधी सावरकर से भेंट करने रत्नागिरी पहुंचे तो इस बिन्दु पर भी चर्चा हुई। सावरकर मानते थे कि हिन्दू समाज सात बेडियों में जकड़ा हुआ था– स्पर्श बंदी, रोटी बंदी, बेटी बंदी, व्यवसाय बंदी, सिंधुबंदी, वेदोक्तबंदी तथा शुद्धिबंदी। 16 नवम्बर 1930 को इन्होंने जातिवाद का दंश मिटाने के लिए अंतर्जातीय भोज का आयोजन किया। फिर फरवरी 1931 में सभी हिन्दुओं के लिए पतित पावन मन्दिर का उद्घाटन किया व 25 फरवरी 1931 को बम्बई प्रान्त अस्पृश्यता उन्मूलक सभा की अध्यक्षता की। 17 सितम्बर 1931 में इन्होंने भंगी बिरादरी द्वारा कीर्तन–गान का आयोजन किया तथा स्त्रियों के अंतर्जातीय भोज का प्रबन्ध कराया। इनके समाज सुधार के प्रयासों से प्रभावित होकर नेपाल के राजकुमार 22 सितम्बर 1931 को इनसे मिलने पहुँचे।

10 मई 1937 को अन्ततः भारी दबाव के कारण सरकार इन्हें रत्नागिरी से बाहर जाने देने पर राजी हो गई। 10 दिसम्बर 1937 को कर्णावती अधिवेशन (अहमदाबाद) में इन्हें हिन्दू महासभा का अध्यक्ष चुना गया तथा अगले सात

वर्षों तक वे इस पद पर चुने जाते रहे। साथ ही सावरकर की साहित्यक यात्रा भी चलती रही। 15 अप्रैल 1938 को इन्हें मराठी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष चुना गया। 1943 में इन्हें नागपुर वि.वि. ने डी.लिट्. की उपाधि प्रदान की तथा ये मराठी नाट्य सम्मेलन के अध्यक्ष चुने गये।

01 फरवरी 1939 को सावरकर ने हैदराबाद के निजाम के विरुद्ध अहिंसक प्रतिरोध शुरू किया। 22 जून 1941 को सुभाष चन्द्र बोस इनसे मिलने पहुँचे और क्रान्ति के तरीकों पर चर्चा की। अप्रैल 1946 में बम्बई सरकार ने इन पर लगी साहित्यक पाबंदी हटा ली। 15 अगस्त 1947 को सावरकर सदन में इन्होंने भगवा व तिरंगा दोनों झण्डे फहरायें। सावरकर जीवनभर अखण्ड भारत के समर्थक रहे थे। आजादी वाले दिन इन्होंने पत्रकारों से कहा– "मुझे स्वराज्य प्राप्ति की खुशी है परन्तु इसका दुख है कि वह खण्डित है। राज्य की सीमाएं नदी–पहाड़ों या संधि–पत्रों से निर्धारित नहीं होती। वे देश के नवयुवकों के शौर्य, धैर्य, त्याग एवं पराक्रम से निर्धारित होती हैं।"

19 दिसम्बर 1947 को जारी एक वक्तव्य में सावरकर ने इजराइल की स्थापना के विषय पर इजराइल का समर्थन किया तथा भारत सरकार द्वारा संयुक्त राष्ट्र में इजराइल की स्थापना के विरोध में वोट देने की भर्तस्ना की।

30 जनवरी 1948 को महात्मा गाँधी की हत्या के बाद नाथूराम गोडसे से सम्बन्ध के आरोप में सावरकर को 05 फरवरी 1948 को प्रिवेंटिव डिटेंशन ले लिया गया जबकि इन्होंने 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' में लेख लिखकर इस हत्या पर दुख जताया था। इन पर मुकदमा चलाया गया पर 10 फरवरी 1949 को इन्हें बिना शर्त रिहा कर दिया गया। इन्होंने दिसम्बर 1949 में हिन्दू महासभा के कलकत्ता अधिवेशन का शुभारम्भ किया। 04 अप्रैल 1950 को पाकिस्तान के प्रधानमंत्री लियाकत अली खान की दिल्ली यात्रा की पूर्व संध्या पर इन्हें बेलगाम जेल में डाल दिया गया क्योंकि इन्होंने पाकिस्तान में रह रहे हिन्दुओं के अधिकारों की रक्षा की माँग की थी। मई 1952 में सावरकर ने अभिनव भारत संगठन की लक्ष्य प्राप्ति के बाद समाप्ति की घोषणा की। फिर 23 जुलाई 1955 को तिलक शताब्दी समारोह में पूना में इन्हें मुख्य वक्ता के रूप में चुना गया। 08 अक्टूबर 1959 को पूना विश्वविद्यालय से डी.लिट्. की उपाधि इन्हें घर जाकर प्रदान की गई। 15 अप्रैल 1962 को बम्बई प्रान्त के गवर्नर इनसे भेंट करने व सम्मान जताने इनके घर पहुँचे।

फिर 29 मई 1963 को पैर में फ्रैक्चर के कारण इन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया। 08 नवम्बर 1963 को पत्नी यमुनाबाई की मृत्यु हो गई। सितम्बर 1965 से ये गंभीर रूप से बीमार रहने लगे और 01 फरवरी 1966 को इन्होंने दवाएं व भोजन त्यागकर इच्छा मृत्यु के वरण का संकल्प लिया। अन्ततः 26 फरवरी 1966 की सुबह साढ़े दस बजे भारतवर्ष की राष्ट्रीय चेतना का यह स्वर सदा के लिए मौन हो गया। 27 फरवरी को पच्चीस सौ आर.एस.एस. कार्यकत्ताओं ने इन्हें सलामी दी। इनकी इच्छा के अनुसार इनका अन्तिम संस्कार विद्युत शवदाह गृह में किया गया।

वास्तव में सावरकर भारत माता के सच्चे सुपुत्र थे जिनके साथ आजाद भारत भी न्याय नहीं कर पाया है।

गुरु चरणों में : श्री राम से प्रथम भेंट

–ईश्वरी प्रसाद प्रेम

वेदारम्भ एवं यज्ञोपवीत के विधिवत् सम्पादन के पश्चात् वीर हनुमान ने गुरुकुल में प्रवेश किया। प्रखर मेधा और शौर्य का धनी यह बालक अत्यल्प समय में ही कुल–भूमि में सर्वप्रिय बन गया।

प्रतिवर्ष गुरुकुल के ब्रह्मचारी किसी अध्यापक के साथ नये–नये अनुभवों को प्राप्त करने और सामान्य ज्ञान वृद्वि के उद्देश्य से देशाटन के लिए जाते थे। इस वर्ष इस यात्रा का नेतृत्व स्वयं आचार्य प्रवर महामुनि अगस्त्य कर रहे थे और यह यात्रा आर्य राष्ट्र की मुख्य राजधानी अयोध्या के लिए प्रस्थित हुई थी। महर्षि को यह तो ज्ञात ही था कि महाराज दशरथ के अश्वमेघ यज्ञ के समय ऋषियों द्वारा निर्मित योजना के अधीन ऋष्य शृंग द्वारा 'पुत्रेष्टि यज्ञ' कराया गया था, जिसके परिणाम स्वरूप महाराज दशरथ की तीन रानियों ने चार वीर पुत्रों को जन्म दिया था। उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि पूर्व निश्चित योजना के अनुसार ये चारों राजकुमार सद्यः महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में वेदाध्ययन और ज्ञान–विज्ञान की विविध शाखाओं का अध्ययन कर रहे थे। सम्पूर्ण स्थिति से स्वयं परिचित होने तथा बाल वीर हनुमान का आरम्भिक परिचय दशरथ पुत्र रामादि से कराने के साथ ही हनुमान के प्रशिक्षण में आवश्यक सुधार करने के उद्देश्य से ही यह यात्रा आयोजित की गई थी।

अयोध्या नगरी की अलौकिक शोभा, अनुपम विशालता और विराटता ने सभी यात्रियों को स्तम्भित तथा अत्यधिक प्रभावित किया। बाल वीर हनुमान महाराज दशरथ के चारों पुत्रों मुख्यतया ज्येष्ठ पुत्र श्री राम के साथ अभिन्न हो गये। महर्षि वसिष्ठ के आश्रम में ही मुनिवर अगस्त्य अतिथि बने थे। हनुमान और श्री राम दोनों वीरों की जोड़ी को देखकर मुनिवर तो जैसे निहाल हो गये।

दोनों ऋषियों ने एक दिन एकान्त में कुछ आवश्यक चर्चा की। उसके अनुसार ही श्री राम को धनुर्विद्या और वीर हनुमान को गदा युद्ध तथा मल्ल युद्ध में प्रथम श्रेणी की प्रवीणता सिद्ध कराने का निश्चय किया गया। कुछ दिनों के इस अविस्मरणीय आतिथ्य के पश्चात् महामुनि अगस्त्य अपने आश्रम पर लौट आये– एक नई अनुभूति, एक नया आत्म–विश्वास और राष्ट्रोद्धार की एक सुनिश्चित योजना लेकर। उनकी यात्रा सफल थी।

ब्रह्मचारी हनुमान का प्रशिक्षण और उपलब्धियाँ

बालक हनुमान की विधिवत् शिक्षा का शुभारम्भ हुआ। मन्त्रों और श्लोकों का शुद्धोचारण हनुमान की सबसे बड़ी विशेषता थी। उनका सस्वर वेद पाठ श्रोताओं को मन्त्र–मुग्ध कर देता। बालक की वक्तृत्व कला अद्वितीय थी। घन गर्जन को लजाने वाली ओजस्विनी वाणी में जब वह अपने विषय का प्रतिपादन शास्त्रीय उद्धरणों की प्रचुरता के साथ–साथ लोक व्यवहार तथा बुद्धि और विज्ञान के धरातल पर मस्तिष्क के साथ हृदय को भी छूने वाली मनोरम शैली में करता तो समा बंध जाता, श्रोतागण विस्मय–विमुग्ध हो धन्य–धन्य कह उठते।

गायत्री मन्त्र के विधिवत् अनुष्ठान और प्रणव जाप की पुण्य प्रक्रिया के साथ ही अष्टांग योग पद्धति से योगाभ्यास भी महावीर हनुमान

की दिनचर्या का अविभाज्य अंग था। फलतः उन्हें जिस सूक्ष्मदर्शी मेघा और ऋतम्भरा बुद्धि की उपलब्धि हुई उससे वे गहन से गहन विषय को अति सरलता से हृदयंगम् करने में समर्थ थे। ऋषि–सुलभ इस मेधा के कारण ही परमेश प्रभु की कल्याणी वाणी– वेद माता के स्तवन (वेदों के अध्ययन) का परम सौभाग्य उन्हें सहज ही प्राप्त था। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद– चारों वेदों का ऋषि चरणों में विधिवत् अध्ययन कर शब्द के सही अर्थों में वे 'चतुर्वेदी' बन गये। साहित्य के साथ ही व्याकरण शास्त्र में तो ब्रह्मचारी हनुमान की पैठ अद्‌भुत थी।

ज्ञान–विज्ञान की अन्य विविध शाखाओं–गणित, भूगोल, इतिहास, कला–कौशल, अर्थशास्त्र आदि में भी सामान्य दक्षता प्राप्त करने के अतिरिक्त राजनीति शास्त्र, नीति शास्त्र और धर्म शास्त्र उनके अत्यधिक प्रिय विषय थे।

पर ब्रह्मचारी हनुमान के शैक्षणिक ज्ञान की यह परिसीमा न थी। एक दूसरा क्षेत्र जिसमें उनकी प्रतिभा का सर्वोपरि विकास हो सका, उनकी प्रतीक्षा करता था। वह था खेल का मैदान। तब आज कल जैसे हलके–फुलके फैशनेबल खेल न थे। लम्बी–लम्बी कूदें, मीलों की दौड़े, पर्वत खण्डों को उखाड़कर साथ लेकर पर्वतारोहण और उसके साथ ही मल्ल शाखा के अपूर्व करतब।

ब्रह्मचारी हनुमान ने बुद्धि और विद्या के क्षेत्र से भी अधिक बल और शौर्य के क्षेत्र में ख्याति अर्जित की। कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के मल्लयुद्धों और शास्त्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेकर ब्रह्मचारी हनुमान सर्वप्रथम रहे थे। कई बार पुरस्कृत भी हुए थे वे। पर विशेषता यह कि इन अभूतपूर्व उपलब्धियों की स्थिति में 'अहं' उन्हें छू तक भी न सका था। विनम्रता और शालीनता जैसे उनकी सबसे बड़ी पूँजी थी। जैसे शक्ति, शील और सौन्दर्य की परम पावनी त्रिवेणी उनके ऊर्जस्थित व्यक्तित्व में सतत प्रवाहित हो रही थी और ले जा रही थी हमारे चरित नायक को 'सत्य शिवं सुन्दरम्' के समन्वित जीवन–ध्येय के समीप।

प्रभु की सत्ता का स्मरण

महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज के समाधि स्थिति के अनुभव जो उन्हें 5–8–53 और 6–8–53 को प्रकाश में आये।

1. जप स्मरण और ध्यान प्रभु भक्ति कहलाती है। जप से प्रभु की समीपता स्थूल रूप से होती है। प्रभु के स्थूल गुण जो सबके लिए आवश्यक हैं और प्रभु सामान्य स्वभाव से (जिन गुणों से) वर्तता है, वे गुण जप अर्थात् प्रभु की समीपता से प्राप्त होने चाहिए। वे गुण कर्म में परिणत हो जावें। स्मरण रूप से अर्थात् प्रत्येक कर्म में प्रभु की सत्ता का स्मरण रहे, याद रहे। यही स्मरण ही भक्ति है। यह प्रभु की सर्वव्यापकता (सर्वशक्तिमत्ता) की समीपता है और ध्यान में अन्तः समीपता, प्रभु का अन्तर्यामी रूप भान होने लगे।
2. पिता पुत्र की, गुरु शिष्य की प्रशंसा उनके सम्मुख न करें और न उनके सम्मुख सुनें। उनके अनुपस्थिति में हृदय से सुनें, गद्‌गद् होकर सुनें। सुनाने वालों के गुण की भी प्रशंसा करें किन्तु प्रशंसा करें तो बड़े चाव से किन्तु हिचकिचाके... या धन्यवाद आशीर्वाद दे दें।

मस्तिष्क का पागलपन

—महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

प्रातःकाल हो चुका था। सरदी जोरों पर थी। सुन्दर फूलों का उद्यान—बाग था। झाड़ियों के साथ काँटे थे। उनकी एक—एक टहनी से माली फूल तोड़ रहा था। काँटे चुभते थे। खून निकलता था, परन्तु माली फूल तोड़ने में व्यस्त था। प्रातःकाल व्यतीत हो गया, सरदी कम हो गई। सूर्य तेजी से चमकने लगा। धूप ने गरमी उत्पन्न कर दी। यहाँ तक की दोपहर को पसीना आने लगा, परन्तु माली उसी प्रकार सुगन्धित और सुन्दर फूलों को तोड़ने में व्यस्थ था। इसी प्रकार दोपहर भी व्यतीत हो गई। सायंकाल सिर पर आ पहुँचा। माली ने एक बड़ा भारी टोकरा फूलों से भरा और सिर पर उठाकर जल्दी—जल्दी शहर की ओर पग बढ़ाने लगा।

अँधेरा अभी फैला नहीं था। सूर्य झाँक—झाँककर संसार को देख रहा था। आकाश पर लालिमा फैली हुई थी। माली को तेजी से चलते देखकर एक मनुष्य ने पूछा— "इतनी जल्दी क्या है? कहाँ जा रहे हो?"

माली— बाग़ से फूल लेकर घर जा रहा हूँ।

मनुष्य— इन फूलों के क्या हार बनाओगे?

माली— नहीं, इत्र खेंचूँगा।

मनुष्य— फिर क्या करोगे?

माली— उसका एक और बार इत्र खेंचूँगा।

मनुष्य— फिर इस इत्र के इत्र का क्या करोगे?

माली— तीसरी बार फिर इस इत्र का इत्र खेंचूँगा।

मनुष्य— इतने भारी टोकरे में से वह तीसरी बार निकाला हुआ इत्र कितना रह जाएगा?

माली— अभी इस पर बस नहीं। चौथी बार फिर इत्र निकालूँगा और इतने फूलों से चौथी बार निकाले हुए इत्र का वज़न दो तोले (चौबीस ग्राम) से अधिक नहीं होगा।

मनुष्य— ओहो! बड़े परिश्रम के पश्चात् इतना ही इत्र निकलेगा।

माली— हाँ, इतना ही मिल सकता है।

मनुष्य— फिर इस दो तोला इत्र का क्या बनाओगे?

माली— नाली में गिरा दूँगा।

इस उत्तर पर उस मनुष्य ने ठहाका लगाया। विचित्र मूर्ख मनुष्य है। इतने परिश्रम, सिरदर्दी और प्रयत्न के पश्चात् अपने सारे परिश्रमों और प्रयत्नों को नाली में फेंक देगा।

पाठक भी माली के अन्तिम उत्तर पर हँसेंगे और कहेंगे कि निःसन्देह माली के मस्तिष्क में पागलपन है।

परन्तु ठहरो! तनिक सँभलो और सोचो कि क्या सचमुच आजकल हम इस माली की भाँति आचरण नहीं कर रहे हैं। कितने लोग हैं जो बह्मचर्य का पालन करते हैं और इत्र से भी बहुमूल्य वीर्य की रक्षा करते हैं। वीर्य शरीर की ज्योति है। यह अत्यन्त परिश्रम से तैयार होता है। कई स्थितियों को पार करता है, फिर जाकर शुद्ध इत्र अथवा वीर्य तैयार होता है, परन्तु मस्तिष्क का पागलपन देखिए कि बहुमूल्य वस्तु को व्यर्थ जाने दिया जाता है। इसका कोई ध्यान नहीं दिया जाता और ब्रह्मचर्य के उपायों पर आचरण नहीं किया जाता। आज सोचो क्या तुम्हारे मस्तिष्क में पागलपन तो नहीं है?

रेलवे स्टेशन की खाली और भरी गाड़ियाँ

—महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

भीड़—भड़का था। लोगों की बड़ी भारी भीड़ थी। रेलवे प्लेटफार्म पर एक शोर मचा हुआ था। सामने बहुत—सी गाड़ियाँ खाली खड़ी थीं। उनका रंग व रोगन अत्युत्तम था। अन्दर गदेले थे। विश्राम का सामान था और प्रत्येक प्रकार की सुविधा थी, परन्तु प्लेटफार्म पर खड़ी हुई जनता की दृष्टि कहीं और ही लगी हुई थी। इतनी देर में गड़गड़ाहट का शोर मचाती फ़प—फ़प करती हुई गाड़ी सामने आकर खड़ी हो गई। सारे डिब्बे स्त्री—पुरुष, बच्चों और बूढ़ों से खचाखच भरे हुए थे, परन्तु गाड़ी के दरवाजे खुले और लोग झुण्ड—के—झुण्ड अन्दर प्रविष्ट होने लगे। गाड़ी के अन्दर के लोग पहले ही तंग बैठे थे। अब एक अन्य संकट आ पड़ा। धक्कम—धक्का है, चीं—पीं है। बच्चे रोते हैं, बूढ़े लड़खड़ाकर गिरते हैं। नौजवान पिसे जाते हैं। किसी की पगड़ी उतर गई। किसी की टोपी उछल गई, परन्तु सभी यह प्रयत्न करते हैं कि किसी प्रकार गाड़ी में बैठने की न सही, खड़े होने को ही स्थान मिल जाए। कुछ मनचलों ने तो गाड़ी के फुट—बोर्ड पर पाँव टिकाने के लिए स्थान मिल जाने को ही उचित समझा है।

यह सारा दृश्य है। एक ओर सर्वथा खाली, विश्राम देने वाली, गदेले और पंखों वाली गाड़ियाँ खड़ी थीं। दूसरी ओर की गाड़ी में यह धकापेल हो रहा था। इसी दृश्य को एक चिन्ताशून्य व्यक्ति खड़ा हुआ देख रहा था। "विचित्र मूर्ख हैं, और गाड़ियाँ खाली खड़ी हैं, उनमें नहीं चढ़ते और इसी एक में ठसाठस भरती होते चले जा रहे हैं। इन लोगों को बुद्धिमान् कौन कहेगा? भला, इतना कष्ट, इतनी सर्दी, इतनी खींचातानी, इतने थका देने वाले प्रयत्न की आवश्यकता क्या है? ये सब इन खाली गाड़ियों में जाकर सवार क्यों नहीं हो जाते।" यह चिन्ता मुक्त यही सोच रहा था। उसके इन विचारों ने उसके मुखमण्डल का रंग बदला। होंठ हिलने लगे और वह कोई आवाज़ निकालने ही लगा था कि गाड़ी ने सीटी दी और यह जा, वह जा, दृष्टि से दूर हो गई। पीछे से वह हँसा और उसने ठहाका लगाया— "विचित्र मूर्ख हैं। वाह, आज विचित्र लोग देखे। अब व्यर्थ के कष्ट में फँसे रहेंगे।"

पढ़ने वाले कुछ समझे। क्या हुआ? रेलवे स्टेशन के इन दृश्यों को देखने वाला तो एक ही चिन्तामुक्त है, जो खाली गाड़ियों को छोड़कर भरी गाड़ियों में सवार होने वालों की बुद्धि की हँसी उड़ा रहा है, परन्तु संसार के स्टेशन पर असंख्य ऐसे लोग हैं, जो सचमुच सुखदायक, गदेले वाली खड़ी हुई गाड़ियों में विश्राम कर रहे हैं। उन्हें अपने गन्तव्य स्थल का कुछ पता नहीं। भरी गाड़ियों में सवार होने वालों के सामने एक लक्ष्य है, जिस पर पहुँचने के लिए वे कष्ट सहन करते हैं, धक्के खाते हैं। उनकी पगड़ियाँ उछाली जाती हैं। अपमान को भी वे सहन करते हैं। इस संघर्ष में चोटें भी आती हैं, पसीना भी बहता है, परन्तु एक मिनट के लिए भी तो यह विचार नहीं करते कि क्यों कष्ट सहन करें, क्यों न सुखदायक गदेलेवाली खाली गाड़ियों में विश्राम कर लें, परन्तु विचित्र है और आश्चर्य चकित कर देने वाला आश्चर्य है कि संसार के स्टेशन पर बहुत कम लोग ऐसे दिखाई देते हैं, जो लक्ष्य पर पहुँचने वाली गाड़ी में सवार होते हैं, प्रत्युत अधिक संख्या ऐसे लोगों की है, जो आनन्द से खाली खड़ी गाड़ियों में आलस्य और प्रसाद की निद्रा में सोये पड़े हैं।

बताओ! अब किस वर्ग का ठहाका लगाया जाए। हा कष्ट! लोग प्रतिदिन स्टेशनों पर ऐसे दृश्य देखते हैं, फिर भी अपनी जीवन को सफल बनाने के लिए इनसे शिक्षा ग्रहण नहीं करते। कहो! तुम किन में हो? खाली खड़ी सुखदायक गाड़ियों में विश्राम करने वाले या लक्ष्य पर पहुँचाने वाली भरी हुई गाड़ियों में संघर्ष से सवार होने वाले?

प्रार्थना

–वेदरत्न प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार

ओम३म् सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्धयामो वचोविदः।
सुमृडीको न आविश।। ऋ० 19.1.11।।

अन्वयः– सोम! वचोविदः वयं त्वा गोर्भिः वर्धयामः। सुमृडीकः न आविश।

अन्वयार्थः– (सोम!) हे सौम्यगुण सम्पन्न परमात्मन्! (वचोविदः वयम्) वाणी के ज्ञाता हम उपासक जन (त्वा गीर्भिः वर्धयामः) तुझ को अपनी वाणियों द्वारा बढ़ाते हैं। (सुमृडीकः नः आविश) अच्छी प्रकार से सुख देने वाले होते हुए तुम हममें प्रवेश करो।

हे भगवन्! तुम सोमरूप हो, तुम शान्त स्वरूप हो, तुम रसरूप हो, तुम आह्लादक हो, तुम प्रसादक हो। पर हो तुम यह सब कुछ उसके लिए जो साधक हो, अपने जीवन में दुर्गुण दुर्व्यसनों के प्रवेश में बाधक हो और सद्गुणों के संवेश में ससाधक हो।

हे सोम! जो तेरी शरण में आ जाता है, श्रद्धा और विश्वासपूर्वक तेरी आराधना में बैठ जाता है, तेरे आदेश और उपदेशों को सजग होकर सुनने लग जाता है, जीवन में तदनुसार आहार और व्यवहार करने लग जाता है तो तब वह भी सोम हो जाता है, सोम्य हो जाता है, रसरूप हो जाता है, आह्लादक हो जाता है, प्रसादक हो जाता है।

हे सोम! हे शान्त स्वरूप एवं रसरूप प्रभो! हम सब तेरे समीप बैठने लगते हैं, तेरे पावन चरणों में नमने लगते हैं, तेरे दिव्य आदेश और उपदेश सुनने लगते हैं, तेरी सत् प्रेरणाओं को हृदयंगम करने लगते हैं, तेरी दिव्य वेदवाणी को पढ़ने लगते हैं, तेरे दिव्य संसार रूप काव्य का आलोडन और विलोडन करते है और जब तेरा मनन चिन्तन और निदिध्यासन आदि करते हैं, तो दिल से तेरी महिमा को अनुभव करने लगते हैं और फिर हम "वचोविदः"– वचोविद बन जाते हैं, वाणियों के वेत्ता बन जाते हैं, वाणियों के ज्ञाता बन जाते हैं, तेरी कृपा से कुछ विचारना जान जाते हैं, कुछ बोलना जान जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप हम फिर मुखरित हो जाते हैं एवं अपनी ज्ञानमयी वाणियों से, अपनी अनुभूतिभरी वाणियों से तेरा बखान करने लग जाते हैं, तेरा व्याख्यान करने लग जाते हैं, स्थान–स्थान पर तेरा गुणगान करने लग जाते हैं, तेरी महिमा का जन–जन में प्रचार और प्रसार करने लग जाते हैं, और उनमें तेरे प्रति श्रद्धा और विश्वास बढ़ाने लग जाते हैं।

हे प्रभो! यह सब हम इसीलिये नहीं करते हैं कि इस सब की तुझको अपेक्षा है, वरन् इसलिये करते हैं कि ऐसा करने से भी हमें ही सुख मिलता है, शान्ति मिलती है, आनन्द मिलता है, तृप्ति मिलती है।

हे सोम! हे शान्तस्वरूप प्रभो! (सुमृडीकः नः आविश) तू अच्छी प्रकार से सुख का दाता होता हुआ, शान्ति का प्रदाता होता हुआ, आनन्द का अनुभव कराने वाला होता हुआ हममें प्रवेश कर। हे रसरूप परमात्मन्! यही है प्रार्थना हमारी, यही है विनय हमारी, स्वीकार कर और हम सबको निहाल कर।

वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर (प्रथम स्तर)

(22 नवम्बर सायंकाल से प्रातः 29 नवम्बर 2018)

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून

यदि आप सत्य, सनातन वैदिक सिद्धान्त को आत्मसात् कर वैदिक साधना पद्धति के शुद्ध स्वरूप को प्रायोगिक स्तर पर समझकर स्वयं तथा ईश्वर की यथार्थ, निर्भ्रान्त अनुभूतियों को स्पर्श करना चाहते हों तो आपका वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी देहरादून में 22 नवम्बर 2018 सायंकाल से प्रारम्भ होकर प्रातः 29 नवम्बर 2018 को समाप्त होने वाले वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर प्रथम स्तर में भाग लेना सार्थक हो सकता है।

यह शिविर आचार्य आशीर्ष जी दर्शनाचार्य के मार्गदर्शन में होगा। इस शिविर में वैदिक योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण तथा योग्यता व पात्रतानुसार शंका समाधानपूर्वक साधना हेतु मार्गदर्शन दिया जायेगा। समस्त दैनिक व्यवहार में मन हो चिन्ता, तनाव से रहित कर शान्त व समता में बनाये रखना किस प्रकार से सम्भव हो सकता है, इसका प्रशिक्षण भी इसके अन्तर्गत होगा।

1. यह शिविर आवासीय है। शिविर में महिलाओं व पुरुषों की निवास व्यवस्था पृथक–पृथक होती है।
2. सम्पूर्ण शिविर में विधिवत् भाग लेने के इच्छुक सज्जन ही आवेदन हेतू सम्पर्क करें। शिविर समापन से पूर्व वापिस जाना सम्भव नहीं हो सकेगा तथा 22 नवम्बर सायंकाल 6:00 बजे के बाद प्रवेश नहीं दिया जायेगा। इस कष्ट हेतु हम पूर्व से ही क्षमा प्रार्थी है।
3. प्रथम स्तर के शिविरों में भाग लेने वाले साधक ही आगे गम्भीर साधना के शिविरों में भाग ले सकेंगे।
4. शिविर में अधिकाधिक 125 साधक साधिकाओं की ही व्यवस्था सम्भव है। अतः इच्छुक जन पूर्व ही अपना स्थान सुरक्षित करा लें। पुराने शिविरार्थी भी भाग ले सकते हैं।
5. स्थान आरक्षण व अन्य जानकारी हेतु इन महानुभावों से सम्पर्क करें : 1. श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी, दिल्ली (मो.नं. 09310444170) समय दिन में 10:30 बजे से सायं 4:00 बजे तक एवं रात्रि 8.00 बजे से 10.00 बजे तक, 2. श्री प्रेम जी–9456790201 समय प्रातः 10:30 बजे से सायं 4:00 बजे तक एवं रात्रि 8.00 से 9.30 बजे तक।

1. अपनी वापसी का आरक्षण पूर्व ही करा कर आयें। शिविर के मध्य अग्रिम यात्रा हेतु आरक्षण करवाने की सुविधा हमारे पास नहीं है।
2. शिविर में भाग लेने की न्यूनतम आयु सीमा 17 वर्ष है। अपने साथ संचिका, पेन, टार्च व फल काटने हेतु चाकू अवश्य लायें।
3. शुल्क–इस ईश्वरीय कार्य में शिविर हेतु श्रद्धा व भावनापूर्वक स्वैच्छिक सहयोग करना सभी प्रतिभागियों के लिये अनिवार्य है।
4. आवश्यकता होने पर आचार्य आशीष जी (मो० नं० 09410506701) से रात्रि 8.00 बजे से 9.00 बजे के मध्य सम्पर्क कर सकते हैं।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
अध्यक्ष–09710033799

ई. प्रेम प्रकाश शर्मा
सचिव–09412051586

सुधीर माटा
कोषाध्यक्ष–9837036040

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

नालापानी, देहरादून - 248008, दूरभाष: 0135-2787001

शरदुत्सव (यजुर्वेद यज्ञ एवं योग साधना शिविर)
आश्विन कृष्ण पक्ष नवमी से कृष्ण पक्ष त्रयोदशी विक्रमी सम्वत् 2075 तक
तदनुसार बुधवार 3 अक्टूबर से रविवार 7 अक्टूबर 2018 तक मनाया जायेगा।

यज्ञ के ब्रह्मा एवं योग साधना निदेशक- स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

प्रवचनकर्ता	:	आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी
वेद पाठ	:	महर्षि दयानन्द आर्ष ज्योर्तिमठ गुरूकुल पौंधा देहरादून के ब्रह्मचारियों द्वारा
यज्ञ एवं अन्य कार्यक्रमों के संयोजक	:	पं० सूरत राम शर्मा जी एवं श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी, हरिद्वार
भजनोपदेशक	:	श्री नरेश दत्त आर्य, पं० सत्यपाल पथिक एवं श्री सुचित नारंग

बुधवार 3 अक्टूबर से रविवार 7 अक्टूबर 2018 तक प्रतिदिन

योग साधना	:	प्रात: 5.00 बजे से 6.00 बजे तक	यज्ञ एवं संध्या	:	सायं 3.30 बजे से 6.00 बजे तक
संध्या एवं यज्ञ	:	प्रात: 6.30 बजे से 8.30 बजे तक	भजन एवं प्रवचन	:	रात्रि 7.30 बजे से 9.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	:	प्रात: 10.00 बजे से 12.00 बजे तक			

ध्वजारोहण	- बुधवार 3 अक्टूबर 2018 को प्रात: 9:00 बजे।
योग सम्मेलन	- बुधवार 3 अक्टूबर 2018 को प्रात: 10 से 12 बजे तक
तपोवन विद्या निकेतन जू.हा. स्कूल का वार्षिकोत्सव	- गुरूवार 4 अक्टूबर 2018 को प्रात: 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
महिला सम्मेलन	- शुक्रवार 5 अक्टूबर 2018 को प्रात: 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
संयोजिका	- श्रीमती सरोज अग्निहोत्री (दिल्ली)
उद्बोधन	- डॉ. अन्नपूर्णा, डॉ. सुखदा सोलंकी, श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा एवं श्रीमती सरोज आर्या जी आदि
शोभायात्रा	- शनिवार 6 अक्टूबर 2018 को प्रात: 7.00 बजे से यज्ञ एवं भजन आदि के कार्यक्रम तपोभूमि में होंगे।
संयोजक	- श्री मंजीत सिंह जी
भजन संध्या	- शनिवार 6 अक्टूबर 2018 को रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक
भजनोपदेशक	- श्रीमती मीनाक्षी पंवार, श्री नरेश दत्त आर्य जी एवं मास्टर उत्कर्ष अग्रवाल
समापन समारोह	- रविवार 7 अक्टूबर 2018 को पूर्णाहुति के उपरान्त ऋषिलंगर का आयोजन है।

नोट : यज्ञ में सम्मिलित होने वाले सभी आर्य बन्धु अपने साथ सफेद/पीली धोती एवं कुर्ता अवश्य लायें तथा बहिने पीले रंग की धोती साथ में लायें।

बस सेवा: रेलवे स्टेशन से तपोवन आश्रम नालापानी के लिए हर समय बस उपलब्ध रहती है।

सप्रेम आमंत्रण

आदरणीय महोदय/महोदया, स्व. बाबा गुरुमुख सिंह जी एवं पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी, स्वामी योगेश्वरानन्द जी परमहंस एवं महात्मा प्रभु आश्रित जी ने तपोवन आश्रम को साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान माना था। आपसे प्रार्थना है कि परिवार व ईष्ट मित्रों सहित यज्ञ एवं सत्संग में उपस्थित होकर हमें कृतार्थ करें एवं अपने-अपने समाज/धार्मिक सत्संगों से यह निमंत्रण हमारी ओर से निवेदित करने की कृपा करें। आपके उदार सहयोग के लिए अग्रिम धन्यवाद।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती, आचार्य आशीष जी, सुधीर कुमार माटा, मंजीत सिंह, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, मनीष बावा, महेन्द्र सिंह चौहान, योगराज अरोड़ा, विजय कुमार, रामभज मदान, विनीश आहूजा।

एवं समस्त सदस्य, वैदिक साधन आश्रम सोसायटी

पेट की गैस का प्राकृतिक समाधान

—डॉ० विनोद कुमार शर्मा

गैस ट्रबल (अफारा) अर्थात्, वायुविकार एक जाना माना सुप्रसिद्ध भयंकर रोग है। इस वायुविकार को अधोवायु कहते हैं। यह तब होती है जब भारी मात्रा में पेट में गैस भर जाती है। इस रोग की उत्पत्ति के दो स्थान माने जाते हैं (i) छोटी व बड़ी आंतें (ii) पित्ताशय व स्टमक (आमाशय) का विकार। आंतों में पड़ी मल की परतें जब सड़ने लगती हैं तब वहाँ से गैस अर्थात् वायु उत्पन्न होने लगती है। यह गैस पेट में पूरी तरह से फैल जाती है और पेट में अफारा के कारण भयंकर पीड़ा होती है। ठीक इसी प्रकार पित्ताशय में जल पित्त सड़ने लगता है तो वहाँ से भी गैस की उत्पत्ति हो जाती है। आमाशय में सड़ा हुआ विजातीय तत्व विकार बढ़ाता चला जाता है। इसी कारण से व्यक्ति को डकारें आनी प्रारम्भ हो जाती हैं। जैसे–जैसे विकार बढ़ता चला जाता है डकारें व बैचेनी भी बढ़ती चली जाती हैं।

गैस बनने के कारण

1. भोजन को ठीक ढंग से न चलाना वैसे ही निगल जाना। 2. मानसिक तनाव में भोजन करना। 3. अत्यन्त गरिष्ठ भोजन का सेवन करना। 4. बिना भूख लगे भोजन खाना। 5. मादक द्रव्यों का सेवन जैसै– चाय, काफी, कोल्ड ड्रिंक्स, शराब तम्बाकू, गुटका। 6. भोजन के तुरन्त बाद काम में लग जाना। 7. रोग जनित विषाणु (बैक्टीरिया) का शरीर में भारी मात्रा में निर्माण होना। 8. फाईबर वाली चीजों को कम खाना या नहीं खाना। 9. पाचन सम्बन्धित विकार आना। 10. भूख से अधिक खाना या भूखे रहना। 11. भोजन के मध्य (बीच) में पानी पीना। 12. विश्राम की कमी से भी गैस हो जाती है।

योग द्वारा करें गैस का उपचार

प्रातः सूर्योदय से एक अथवा डेढ़ घण्टा पूर्व बिस्तर का त्याग कर देवें। रात्रि का रखा हुआ जल खाली पेट पीवें। यदि वातावरण में ठण्ड है तो आप पानी को गुनगुना कर लेवें। पानी पीकर चहलकदमी करें। फिर शौच जायें इससे पेट साफ होगा। अब आप शरीर की नाड़ियों, मांसपेशियों, ग्रन्थियों को स्वस्थ बनाने के लिये निम्न योगाभ्यास करें।

1. **पश्चिमोत्तानपाद आसन** : यह आसन टांगों के लिए, पीठ व पेट के लिए, पाचन तंत्र के लिए चमत्कारी आसन है। मोटी महिलाएं व पुरुष इस आसन को निमित्त रूप से करें लेकिन कमर दर्द की अवस्था में सावधानी बरतें।

2. **वज्रासन** : इस आसन को भोजन के बाद अवश्य करें। अधिक से अधिक देर तक इस आसन में बैठने का अभ्यास बनायें। इस आसन से टांगों के दर्द, जकड़न, कब्ज, गैस, उदर विकृति आदि रोग ठीक होते हैं।

3. **उष्टासन** : पाचन तंत्र की कमजोरी, कब्ज, गैस, टांगों का दर्द, थायरायड, टान्सिल्स, स्नायु तंत्र की कमजोरी आदि रोगों के उपचार के लिए यह आसन अत्यन्त लाभकारी है।

4. **कटिस्नान** : हैण्डपम्प के ठण्डे ताजा जल से कटिस्नान लेने से स्वप्न दोष, आंतों की भयंकर गर्मी, उक्त रक्तचाप, अल्सर, आंव, कब्ज, बवासीर, पेट कम करना तथा स्त्रियों को रोगों में लाभ होता है।

   गुनगुने सहने योग्य गर्म जल से कटिस्नान लेने से साइटिका, सरवाईकल, स्पांडिलाइटिस, कमर दर्द, मासिक स्राव में विलंब, निम्न रक्तचाप में लाभ होता है।

गैस में तात्कालिक लाभ के लिये कुछ घरेलू नुस्खे

1. खांड और घी को आंवले के रस में मिलाकर उपयोग करने से वायु विकार नष्ट होता है।
2. पेट में गैस भर जाने पर या पेट दर्द में तिलों को पीसकर उनमें थोड़ा कपूर, अजवायन, इलायची और काला नमक सब चुटकी भर मिलाकर सभी को गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से अत्यधिक लाभ मिलता है।
3. सोंठ व जायफल का चूर्ण बनाकर लेते रहने से पेट में गैस की शिकायत से राहत मिलती है।
4. अदरक का रस 6 ग्राम, नींबू का रस 6 ग्राम, शुद्ध मधु (शहद) 6 ग्राम इन तीनों को अच्छी प्रकार मिलाकर दिन में चार बार चाटने से विशेष लाभ होता है।
5. सहजन के फूल या फली की सब्जी पेट में गैस संचय की बीमारी में लाभदायक होती है।
6. जीरा, कलौंजी और अजवायन तीनों को बराबर मात्रा में लेकर सभी का चूर्ण बनाकर शुद्ध जल के साथ सेवन करने से पेट की गैस दूर होती है और पाचन शक्ति बढ़ जाती है।
7. यदि पेट में गैस बनकर ऊपर चढ़ने की शिकायत हो तो एक गिलास गरम पानी में चार–पांच काली मिर्च पीसकर मिलाऐं और उसमें एक नींबू काटकर निचोड़ दें। नित्य प्रति उठते ही इसे पी जायें। यह अत्यन्त असरकारक है पेट में गैस नहीं बनती है।
8. पेट में वायु बनने पर 5–7 ग्राम हल्दी और नमक गरम पानी के साथ सेवन करने से लाभ होता है।
9. 5 सूखा आंवला रात को भिगो दें प्रातः मसलकर छानकर गुनगुना करके पीने से पेट साफ होगा और गैस दूर होगी।
10. अदरक को काटकर उसके ऊपर नींबू रस डालें व नमक बुरककर रख दें। 2 घण्टे बाद अदरक को चूसें यह लाभदायक है।

गैस की समस्या में आहार द्वारा चिकित्सा

गैस की भयंकर समस्या में हल्का सुपाच्य शीघ्र पचने वाला शोधक आहार लेना चाहिये। आहार को खूब चबा–चबाकर खाना चाहिये। वैसे इस विषय में कहा गया है कि खाने की वस्तु को इतना चबाओ कि वह मुंह में ही पीने योग्य हो जाये और तरल पदार्थों को इस तरह से सेवन करो जैसे खाना खा रहे हों– अच्छा हो कि गैस की समस्या होने पर तरल पदार्थ तथा कुछ चुने हुए फल व सब्जियों के रस या सूप ही लेवें यदि शीघ्र ही अच्छा होना है तो कुछ न लिया जाये। जब तक अन्दर से कुछ खाने–पीने की मांग न हो तब तक कुछ नहीं लेना चाहिये। गरम अथवा ठण्डा पानी वह भी नींबू मिलाकर लें। साथ ही आरोग्यामृत चूर्ण की फांकी दिन में 2–3 बार लेवें यह तो अनेकों रोगों के लिए संजीवनी का कार्य करता है। यह आरोग्यामृत अनेकों रोगों को नियन्त्रित करता है।

गेहूँ के आटे के स्थान पर मक्का, जौ व ज्वारी के आटे में हरी सब्जियां डालकर रोटी बनाकर खायें। कुछ लोग मेरे इस कथन से चौंक पडेंगे और कहेंगे कि आप मक्का की रोटी खाने को बता रहे हैं। गेहूँ पचने में देरी करता है। दूसरी रोटियों में स्टार्च कम होता है। वे हल्की होती है शीघ्र पच जाती हैं। जब गैस की समस्या हो तो दूध भूलकर भी न लेवें।

निश्चय ही इस प्रकार के आहार क्रम से आप स्वयं को वायु विकार से मुक्त कर पायेंगे। आप अपना जीवन रोगियों व भोगियों की तरह क्यों काटना चाहते हैं आप परमात्मा के अमृत पुत्र व पुत्रियां हैं आप योगमय जीवन बनाकर योगी बनकर जीवन का सच्चा सुख प्राप्त करें।

Delite KOM

freedom to work...

DELITE KOM LIMITED

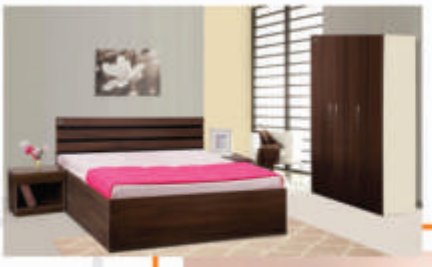

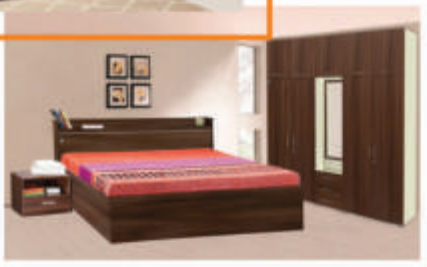

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

Delite KOM

DELITE KOM LIMITED

Kukreja House, IInd Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055

Ph. : 011-46287777, 23530288, 23530290, 23611811 Fax : 23620502 Email : delite@delitekom.com

ISO 9001 DNV CERTIFIED

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2018-2020

समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

With Best Compliments From MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स/गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्क्स
- गैस स्प्रिंगस/विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बस बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर/फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लांट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।
संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com